गिनीपिग

मोहित चटर्जी

अनुवाद
सान्त्वना निगम



राधाकृष्ण प्रकाशन

१९७५

हिन्दी अनुवाद : सान्त्वना निगम
नई दिल्ली

मूल्य : ८ रुपये

प्रकाशक
राधाकृष्ण प्रकाशन
२ अंसारी रोड, दरियागंज
दिल्ली-११०००६

मुद्रक
भारती प्रिंटर्स
के-१६, नवीन शाहदरा
दिल्ली-११००३२

पात्र

पहला
दूसरा
तीसरा
लड़की

क्रम

निदेशक का वक्तव्य

राजिन्दर नाथ

१६७१ का वर्ष। पूजा के दिन। कालीबाड़ी में एक नाटक 'राजरक्त' थियेटर वर्कशाप (कलकत्ता) द्वारा खेला जाने वाला। उससे कई दिन पहले इस नाटक को देखने का आग्रह, कलकत्ता के कुछ मित्रों द्वारा।

हजारों दर्शको मे मैं भी एक। स्थान ऐसा मिला जहाँ से कभी-कभी कोई पात्र नजर आता और अक्सर लाल रोशनी। कुछ ही क्षण देख पाया। दूसरे दिन शाम को नाटक के अभिनेता-निदेशक विभास चक्रवर्ती और दूसरे अभिनेताओं से लम्बी बातचीत हुई और उसी बातचीत के दौरान मन-ही-मन नाटक को खेलने का निश्चय किया।

जब बंगला का आलेख मिला तो पहली बार यह मालूम हुआ कि नाटक 'राजरक्त' के नाम से नही बल्कि 'गिनीपिग' के नाम से छपा है।

'गिनीपिग' और 'राजरक्त' का आलेख एक होते हुए भी बाद मे जोड़े गये कुछ अंशों के कारण नाटक के दृश्य में आमूल परिवर्तन हो गया। गिनीपिग के मूल आलेख के प्रारम्भ और अंत मे कुछ पंक्तियाँ और जोड़ी गयी। आरंभ की पंक्तियों मे 'दूसरा' व 'तीसरा' अखबार की सुर्खियाँ पढने की तरह राजा साहब के राज्य में व्याप रहे हिंसा, भ्रष्टाचार, दमन का उल्लेख करते है। अंत मे जोड़ी गयी पंक्तियो मे 'पहला', 'तीसरा' और 'लड़की' विद्रोह की भाषा और स्वर में राजा साहब को मारने की तैयारी करते है।

जिस खूबी और काव्यात्मक ढंग से नाटककार ने इस नाटक में सत्ता के दमन के बदलते-बिगडते रूपों को दर्शाया है वह अपने आप में एक बहुत बड़ी उपलब्धि है। मेरे विचार मे बाद में जोड़े गये अंश नाटक की पूरी शैली के बिलकुल विपरीत हैं। शायद कलकत्ते में ये इसलिए जोड़े गये ताकि नाटक को वहाँ के दर्शकों की रुचि के अनुकूल बनाया जा सके। मैंने यह निश्चय किया कि मूल आलेख यानी 'गिनीपिग' का ही उपयोग करना उचित होगा।

पहले प्रदर्शन से कुछ दिन पहले आलेख में दिये गये अंत को बदल देने की बात

मन मे ज़ोर पकड़ती गयी और प्रदर्शन से दो दिन पहले अंत बदल दिया। वह अंत था :

"लूसी खून तेरा भी पीछा कर रहा है। भाग मेरे साथ आ—बहुत आहिस्ते—छुप कर"

'दूसरा' यह संवाद बोलता हुआ मंच से चला जाता है। उसके बाद मंच पर जब रोशनी आती है तो नाटक के शुरू के एक दृश्य को बिना संवादों और एक 'बड़ी तबदीली' के साथ दोहराया जाता है। राजा की कुर्सी पर अब 'दूसरे' की जगह 'पहला' बैठा है। 'तीसरा' अपनी जगह हाथ बाँधे खड़ा है और 'पहले' की जगह 'चौथा' (यह पात्र आलेख में नहीं है) हाथ में जूता लिये 'नील डाउन' हुआ खड़ा है। इसी के साथ परदा गिरता है।

इससे मेरा मकसद यह था—आप इसे मेरी निजी टिप्पणी भी कह सकते हैं—कल के क्रांतिकारी आज के अधिनायक बनते हैं और वे अपने खिलाफ़ नये क्रांतिकारियों को जन्म देते है—इतिहास इस बात का साक्षी है।

इस परिवर्तन से एक बहुत बड़ा विवाद उठ खड़ा हुआ। दो प्रश्न जो मुख्य रूप से उठे, वे थे : (१) क्या निदेशक को नाटक को बदलने का अधिकार है? (२) क्या यह अंत नाटक की आत्मा के विपरीत नही है?

पहला प्रश्न बहुत पेचीदा है और इसका उत्तर हाँ या ना में नही दिया जा सकता। दूसरे प्रश्न के कथन मे, बाद में कुछ सच्चाई नज़र आयी। इस अंत से जो मैं कहना चाहता था वह अपने आप में एक सच्चाई होते हुए भी उसके बिलकुल विपरीत है जो यह नाटक कहना चाहता है। बहरहाल प्रदर्शन हो चुके थे और नाटक को फ़ौरन दुबारा खेलने की कोई योजना नहीं थी। इसलिए उस मौके का इंतज़ार करना ही मुनासिब समझा जब कि नाटककार से मिल कर ही इस बारे में कोई निर्णय लिया जाय, क्योंकि जो अंत आलेख में है वह मुझे पसंद नही। (आलेख ज्यों का त्यों छापा जा रहा है, वह तमाम संवाद भी जो प्रस्तुति में काट दिए गये थे।)

जब नाटककार से भेंट हुई तो यह निर्णय हुआ—

नाटककार को मेरा दिया गया अंत बिलकुल मान्य नही था, आलेख में दिया गया अंत मुझे पसंद नही था इसलिए मैंने एक और सुझाव दिया कि नाटक का अंत कुछ ऐसे हो : 'दूसरा' उस दृश्य में जब खून उसका पीछा कर रहा है मंच से बाहर नहीं जाता और अपनी कुर्सी के इर्द-गिर्द तेज़ी के साथ चक्कर लगाता रहता है, और इसी के साथ पर्दा गिर जाता है। इसके लिए नाटककार ने अपनी अनुमति दी और उसके बाद जब भी नाटक खेला गया, इसी अंत के साथ।

दो शब्द मंचसज्जा के बारे में जिसकी बहुत चर्चा रही। बहुत सादा होते हुए

भी बिलकुल अनोखी। मंच-मध्य मे एक बहुत ही आलीशान कुर्सी जिसको पूरे नाटक मे सिर्फ 'दूसरा' यानी राजा इस्तेमाल करता है और सिर्फ एक बार 'पहला' जब वह यह समझता है कि उसने राजा को मार दिया। इसके अलावा एक-एक 'क्यूब' मंच के चार भागों मे और सारे मंच पर पोलिथीन की चादरें लटकी हुई जिनसे नाटक के 'मूड' के अनुकूल वातावरण बनता था।

दिल्ली साहित्य कला परिषद द्वारा 'गिनीपिग' को उस वर्ष का सर्वश्रेष्ठ प्रस्तुति का पुरस्कार मिला और इसमें भाग लेने वाले दो अभिनेताओं—कुलभूषण खरबंदा और कीमती आनन्द को अभिनय के पुरस्कार भी मिले।

एक स्मृति जो इस नाटक के प्रस्तुतिकरण के साथ जुड़ी हुई है वह है लगभग खाली प्रेक्षागृह।

ऐसे नाटक बहुत कम होते हैं जिनके हो जाने के बाद एक गहरी संतुष्टि का अनुभव हो। 'गिनीपिग' मेरे लिए उन बहुत कम नाटकों में से एक है।

मोहित चटर्जी द्वारा लिखित तथा सान्त्वना निगम द्वारा हिन्दी में अनूदित इस नाटक का हिन्दी में सर्वप्रथम प्रदर्शन 'अभियान' दिल्ली द्वारा फाइन आर्टस थियेटर, नयी दिल्ली मे ९ मई, १९७२ को हुआ।

निर्देशक	:	राजिन्दर नाथ
दृश्यबंध	:	अशोक भट्टाचार्य
आलोक	:	सितांशु मुकर्जी

पात्र

पहला	:	अनिल सहगल
दूसरा	:	कुलभूषण खरबंदा
तीसरा	:	श्रीमती आनन्द
लड़की	:	चेतना तिवारी

पहला दृश्य

एक कमरा। पीछे की दीवार के बीचोंबीच एक ढाल टंगी है और उसके दोनों तरफ़ दो बंदूकें आड़ी रखी हुई हैं। एक तरफ़ एक बहुत बड़ा कंकाल लटक रहा है। दूसरी तरफ़ एक हैंगर पर दो-एक पेंट, कमीज, टोपी, कोट लटकाये हुए हैं जिन पर खून के धब्बे हैं। कुल मिला कर पूरा कमरा सन्नाटे से भरा कुछ रहस्यमय-सा दीखता है। बिलकुल ही वास्तविक रूप की आवश्यकता नहीं है। एक मेज, दो-तीन फंसी कुर्सियां। एक कलेंडर। मेज के एक कोने पर रखी एक अच्छी-सी छड़ी। दर्शकों की ओर पीठ किये हुए दूसरा और तीसरा। दोनों निःशब्द, दबे पांव चीज़ों को झाड़-पोंछ कर ठीक जगह रख रहे हैं। दोनों एक ही तरह से चीजों को रखने के बारे में काफ़ी सावधानी बरत रहे हैं। पहला व्यक्ति मेज पर ठोढ़ी टिका कर दर्शकों की ओर टकटकी लगाये डरा हुआ-सा देख रहा है। उसने दोनों बाँहों से मेज के दोनों किनारों को कस कर पकड़ रखा है। पर्दा उठने के बाद कुछ देर तक ऐसा ही रहता है। फिर अचानक घड़ी का अलार्म तीखी आवाज करता हुआ बज उठता है। पहला अपने दायें हाथ में पकड़ी एक काल्पनिक छुरी धीरे-धीरे ऊपर उठाता हुआ आंखों के आगे से ले जाता है। खड़ा हो जाता है। चेहरा उत्तेजित है। अलार्म रुक जाता है।

पहला : खून, खून! छुरे से अभी तक खून की बूंदें टपक रही है। राजा साहब का खून। जैसे लाल सिंदूरी बादल पिघल-पिघल कर चू रहा हो। दरवाजा बंद कर दो, राजा साहब का संतरी आयेगा। दरवाज़ा बंद कर दो! (फिर अलार्म बज उठता है। सब चुप हैं।) आ ऽ आ ऽ मुझे पकड़कर ले जायेंगे।

बेहोश-सा मेज़ पर अपना सिर टिका देता है।

तीसरा : (बहुत शांत। बंदूक झाड़ते-पोंछते हुए) फिर शुरू हो गया।

दूसरा : (शांत हंटर पोंछते हुए) शुरू हो गया।

तीसरा : इस अलार्म वाली घड़ी को हटा कर रखना बेहतर था।

दूसरा : राजा साहब की कोठी में से कोई चीज़ हटाने की इजाज़त नहीं है।

तीसरा : आज उसकी आँखें और भी लाल हो गयी हैं।

दूसरा : देखते ही राजा साहब दस हंटर लगाने का हुक्म देंगे।

तीसरा : अब भी आँखों की कद्र करना न सीखा। मेरी आँखें देखो। (उसके पास आ कर अपनी आँखों को खोल कर दिखाता है।) सफ़ेद, ज़रा भी लाल नहीं हैं। (दूसरे की आँखों में भय झलकता है।) क्या हुआ ? क्या हुआ, बताओ न ?

दूसरा : मेरी आँखें देखो। (आँखें दिखाते हुए।) बिलकुल सफ़ेद, ज़रा भी लाल नहीं हैं। नहीं न ?

तीसरे की आँखों में भी डर झलकता है। फिर दोनों एक साथ हँस उठते हैं और अपने काम में लग जाते हैं।

तीसरा : दस हंटर खाने से आँखों में पानी भर जायेगा। धुल-पुँछ कर आँखें ज़रूर सफ़ेद हो जायेंगी। है न, भई ?

दूसरा : यह सब राजा साहब के हंटर की करामात है।

तीसरा : (तारीफ़ करते हुए) जैसे जादू जानता हो।

दूसरा : क्या बढ़िया आवाज़ है ! चटाख-पटाख...!

तीसरा : इसके अलावा खाल पर पड़े निशान कैसे अपने आप मिट जाते हैं !

दूसरा : जल्दी-जल्दी सब सँवार लो। राजा साहब अभी आते ही होंगे।

तीसरा : जहाँ जो चीज़ थी, वहीं रख दी है। राजा साहब आज बख़्शीश देंगे।

दोनों बच्चों की तरह ताली बजा-बजा कर अपनी खुशी ज़ाहिर करते हैं। पहला धीरे से सिर उठाता है।

पहला : (चीख़ कर) स्टाप, स्टाप...!

वे दोनों ताली बजाना बंद कर देते हैं और अपने-अपने कामों में लग जाते हैं।

पहला : (चीख़ कर) स्टाप...स्टाप...!

वे मुड़ कर देखते हैं—अचानक चुप्पी घिर आती है।

दूसरा : फिर शुरू हो गया।

तीसरा : मुझसे नहीं होगा। आज मैं इस खेल में शामिल नहीं हूँगा।

पहला : कमरे का सब कुछ उलट-पलट दूँगा।

कैलेंडर खींच कर उतारता है और मेज़ पर पटक देता है।

घड़ी जमीन पर रख देता है। कंकाल को छूने लगता है... वे उसे रोकते हैं।

पहला : मुझे हाथ न लगाओ। मैं आज़ाद हूँ। किसका डर है? राजा साहब को मैंने मार दिया है, अब किसका डर है?

दूसरा : जहाँ की जो चीज है, वहीं रहने दो। राजा साहब आने वाले हैं। वह बेहद नाराज़ होंगे।

तीसरा : हंटर नहीं। अबकी बार बंदूक। बुलेट।

पहला : बुलेट? (हँस उठता है।) कैसी बुलेट? उस छुरे पर किसका खून है? (दूसरा घड़ी मेज पर रखने की कोशिश करता है।) हाथ मत लगाओ। घड़ी वहीं रहेगी। अब से मेरा हुक्म चलेगा।

दूसरा : राजा साहब का अपने हाथों से सजाया कमरा। कोई इसका कुछ नहीं बदल सकता...यह कमरा कभी नहीं बदल सकता।

पहला : इस बुड्ढे को मैं जान से मार डालूँगा। राजा साहब का कुत्ता! कुत्ता!

तीसरा : फिर उसी खेल की शुरूआत। (कैलेंडर उठाने लगता है।) इसे उठाकर रखता हूँ। राजा साहब आ पहुँचे तो अच्छा नहीं होगा।

पहला : खबरदार, हाथ लगाया तो! (झपट कर गर्दन पकड़ लेता है।) स्पाई। मेरी सब बातें तू राजा साहब तक पहुँचाता है, क्या मुझे नहीं मालूम? क्या मैं यह समझ नहीं सकता? (धक्का मार कर गिरा देता है।) शरीर से राजा साहब के कुत्ते की बू आ रही है। (चिल्ला कर) मेरा हुक्म है, कमरा बिलकुल उलट-पलट कर दो। सब चीजें बिखेर कर तहस-नहस कर दो। तोड़ो। सब कुछ तोड़ डालो। फिर कमरे को अपनी मर्जी से सजायेंगे। बिखेर दो सब कुछ...!

दूसरा : हुक्म नहीं है।

पहला : मेरा हुक्म है।

तीसरा : यह कमरा बदला नहीं जा सकता।

पहला : मेरा हुक्म है।

दूसरा : जो चीज जहाँ है, वहीं रहेगी।

पहला : (बहुत जोर से चीख कर) मेरा हुक्म है।

दूसरा : तुम हो कौन?

पहला : मैं? मैंने राजा साहब को मार डाला है। अब इस कमरे का हुलिया बदल दूँगा। मैं कोई बेकार का आदमी नहीं हूँ। मुझमें घृणा है, रोष है, इच्छा है—मैं हूँ कौन! तुम लोगों को काटने पर खून तक न निकलेगा—मिट्टी चाटने वाले केंचुए! मैं कौन हूँ? मैं राजा साहब

का हत्यारा हूँ।

तीसरा : (दूसरे से) बिलकुल कल रात की तरह। आज मैं इस खेल में शामिल नहीं होऊँगा।

दूसरा : पर अब रोकना मुश्किल है। इसने तो शुरू कर दिया।

तीसरा : मुझसे नहीं होगा। अब और अच्छा नहीं लगता यह सब।

दूसरा : पर इसने तो शुरू कर दिया है।

तीसरा : कितना भयंकर खेल है!

दूसरा : उसकी आँखें कल ही की तरह लाल हैं। वह अभी बगल वाले कमरे में से उसे बुलवा लेगा।

तीसरा : लड़की थकी हुई है। आज के इस खेल से उसको और भी तकलीफ होगी। रोज-रोज और कितना सहेगी?

दूसरा : वह जरूर अभी उसे बुला लेगा। कल भी ठीक इसी समय बुलाया था।

तीसरा : (पागलों की भाँति) ए, सुनो! मैं इस खेल में नहीं हूँ। रोज-रोज मुझसे नहीं होता। मेरी उम्र बढ़ती जा रही है, और कितने दिन? जब तक हो सके इस कमरे की चौकसी करता रहूँगा। जहाँ पर जो कुछ है, बिलकुल उसी तरह छोड़ कर चला जाऊँगा। (पहला उसकी ओर देखता है। तीसरा कुछ अटपटा-सा महसूस करता है।) यही मेरा आखिरी फैसला है। मैं अब इस तरह के खेल में नहीं शामिल होऊँगा। मैं जा रहा हूँ।

पहला . कहाँ?

तीसरा : अपने काम पर और कहाँ? कमरे की सब चीजें झाड़-पोंछ कर नहीं रखनी हैं?

पहला : (काल्पनिक छुरा उठाता है।) इसे झाड़-पोंछ कर नहीं रखोगे?

तीसरा : ए, इसे हटाओ! मैं कहता हूँ, हटाओ इसे!

दूसरा : राजा साहब देखेंगे तो शामत आ जायेगी। इस बार हंटर नहीं, बुलेट।

पहला : (हँस उठता है।) बुलेट। राजा साहब कहाँ हैं? (हँसता है।) बुलेट, एँ? टू लेट भैया, टू लेट।

तीसरा : आज तुमने कोई भी काम नहीं किया। (एक बहुत बड़ा जूता लाते हुए) जूता पालिश तक नहीं किया।

पहला : (डर कर) हटा दो—मैं कहता हूँ छुपा कर रखो। मैं इसे नहीं देखना चाहता। राजा साहब नहीं हैं। मरे हुए आदमी का जूता। मुझे डर लगता है।

तीसरा : (हाथ में पकड़ा जूता दूर से ही हिलाते हुए) बिलकुल पालिश नहीं है इस पर। कितने दिन से इस पर पालिश नहीं की। धूल जम गयी है।

पहला : (आँखों पर हाथ रख कर) छुपा कर रखो इसे छुपा,कर रखो, मरे हुए आदमी का जूता ! मुझे डर लगता है।

दूसरा : देखो, तुमने ही खेल शुरू किया है । (हैंगर से उतार कर एक टोपी सिर पर रख कर जल्दी से एक कीमती कोट पहनते हुए)हाँ, तुम्ही ने खेल शुरू किया है।

तीसरा : तुम तो ड्रैस भी पहने ले रहे हो। एँ, ड्रैस भी पहन ली ! (हँस कर) ऐसी-वैसी नहीं, खुद राजा साहब की ड्रैस है इस खेल को खेलने का लोभ तुम्हें भी कुछ कम नहीं है। बिलकुल राजा साहब की तरह दीख रहे हो।

दूसरा : अभी वह लड़की को बुलायेगा।

तीसरा : तो सचमुच खेल शुरू हो ही गया।

दूसरा : बिना खेले कोई चारा नहीं है।

तीसरा : मर जाता तो छुट्टी मिलती।

दूसरा : स्टार्ट !

तीसरा : स्टार्ट !

दूसरा : (पहले की ओर इशारा करके) वह छुरे को अपनी कमर में खोंस कर रखेगा। चेहरा शांत। मौक़ा मिलते ही राजा साहब के पीछे से छुरा उठा कर...बस...!

पहला उपरोक्त संवाद का अभिनटन करता है।

तीसरा : ठीक है। शाबाश ! बढ़िया कर रहा है। है न ? अब शुरू करना चाहिए। सब रेडी ?

दूसरा : लड़की ?

तीसरा : वह तैयार है।

दूसरा : (चिल्ला कर) रेडी ?

बाहर से एक लड़की की आवाज : रेडी।

दूसरा : स्टार्ट !

दूसरा एक सीटी बजाता है। कमरे की रोशनी बदल जाती है। दूसरा मंच से बाहर निकल कर तुरंत ही लौट कर धीरे से प्रवेश करता है। अब वह राजा साहब है। यहाँ आलेख में राजा साहब न लिख कर 'दूसरा' लिखा जा रहा है। राजा साहब की बातें स्नेहभरी आवाज में कही जायेंगी। जरा भी रोष या तेजी नहीं झलकेगी। संवादों को बोलने का अंदाज तथाकथित खलनायक की तरह नहीं होना चाहिए। चरित्र के मूल उद्देश्य के साथ-साथ अभिनय में

कंट्रास्ट दिखाना पड़ेगा। बुजुर्ग अभिभावक का स्नेहपूर्ण भाव लक्षित होगा। इसी बीच पहला अनिच्छा के बावजूद जूता पालिश करना शुरू कर देता है। ज़ोर-ज़ोर से ब्रश मार रहा है।

दूसरा : कैसा चल रहा है सब ?

तीसरा : आपके आशीर्वाद से सब ठीक ही चल रहा है।

दूसरा : यह तो अब तक पालिश-एक्सपर्ट नहीं हुआ। आदत पड़ जाने से इतना ज़ोर नही लगाना पड़ता। काम करने के साथ ताल मिला कर थोड़ा-थोड़ा झूमने से ही ठीक हो जाता है। (पहले से) यू स्टैंड अप !

पहला 'नील डाउन' हुआ रहता है। दोनों हाथों में दो बड़े-बड़े जूते।

दूसरा . नही, एकदम बुद्धि भ्रष्ट नही हुई। खड़ा होना सीख लिया है। बड़ा अच्छा लग रहा है।

तीसरा : थोड़े दिन यहां रहने के बाद और भी स्मार्ट दिखेगा। हमारी तरह बूढ़ा थोड़े ही है। इन सब मामलों में बॉडी का फिट होना ज़रूरी है।

दूसरा : क्या तुम उसकी तरफ से बोल रहे हो ?

तीसरा : नही, सर !

दूसरा : (पहले से) काम-काज कैसा लग रहा है ?

पहला : आपके आशीर्वाद से अच्छा ही लग रहा है, सर !

दूसरा : घड़ी मेज पर क्यों नहीं रखी है ?

पहला : ठीक से रख रहा हूं, सर !

घड़ी उठा कर पहले वाली जगह पर रख देता है।

दूसरा : कैलेंडर ?

पहले वाली जगह पर रखता है। फिर 'नील डाउन' हो जाता है।

दूसरा : (तीसरे से) जो चीज़ जहां की है वहीं पर है न ?

तीसरा : हां, सर ! अब सब ठीक है।

दूसरा : (निर्लिप्त भाव से) ये सब गलतियाँ क्यो हो रही हैं ? किसकी गलती है ?

तीसरा : ठीक से लगा ही रहे थे कि बीच मे आप आ गये, सर ! जल्दी मे पूरा नही कर सके।

दूसरा : मेरे आने के बहुत पहले से ही मेरे कदमों की आहट नही सुन पाते ?

पहला : बाहर शोर हो रहा था। सुनाई नही दिया, सर !

दूसरा : शोर तो हर समय होता रहता है। पर वह शोर ही तुमको ज्यादा

क्यों सुनायी देता है ? यह धरती तेज आवाज करती हुई घूम रही है पर उसके चलने में कोई भूल तो नही हो रही है न ? इस धरती से हमें व हुत कुछ सीखना है।

तीसरा : उन्होंने एक पत्थर भी मारा है, हुजूर ! एक शीशा टूट गया है।

दूसरा : धरती की उम्र कितनी हुई होगी ?

पहला . बहुत साल, हुजूर !

दूसरा : उस पहले ही दिन से वे पत्थर मारना चाह रहे हैं...सालों बाद एक पत्थर आ गिरा—बेचारे ! थोड़ी सान्त्वना तो उन्हें चाहिए न। वह ठीक हो जायेगा। मन लगा कर काम करो। सब ठीक हो जायेगा। (पहले से) अरे ! यह क्या ? लगता है आँखें लाल-सी हो रही हैं। (प्यार से) क्या हुआ ?

लाड़ में आकर पहले का चेहरा मान से भर जाता है और नर्म हो जाता है। दोनों हथेलियों से आँखों को पोंछता रहता है।

दूसरा : (तीसरे से) देखो तो ! रो रहा है क्या ?

तीसरा : रो रहे हो ?

पहला सिर हिला कर हामी भरता है।

दूसरा : वाह, बहुत अच्छे ! होगा, तुम से होगा। अब बताओ, तुम सुखी हो ?

पहला सिर हिलाता है।

दूसरा : शब्दों से स्वीकार किया जाता है, ऐसे नही। स्वीकार कर रहे हो कि तुम सुखी हो ?

पहला : हाँ, सुखी हूँ।

दूसरा : तुमने स्वीकार किया है कि तुम सुखी हो ?

पहला : याद नही है, मालिक !

दूसरा : याद करने की कोशिश करो।

पहला : याद नहीं आ रहा, सर !

दूसरा : (डांट कर) स्वीकार करो, तुम सुखी हो।

पहला : मैं सुखी हूँ।

दूसरा : स्वीकार कर लेने के बाद अच्छा-सा नही लग रहा, क्यों ?

पहला : कुछ समझ में नही आ रहा है, सर !

दूसरा : स्वीकार करो।

पहला : स्वीकार कर रहा हूँ कि बहुत अच्छा लग रहा है।

दूसरा : बहुत अच्छे ! (तीसरे से) क्या सोच रहे हो ?

तीसरा : स्वीकार करता हूँ, मैं सुखी हूँ।

दूसरा : तो ठीक ही हो। मन को बड़ी शांति मिली। अच्छा बताना जरा...।

दोनों : स्वीकार करते हैं, हम सुखी है।

दूसरा : मैं कह रहा था अगर तुम लोग...।

दोनों : स्वीकार करते है, हम सुखी हैं।

दूसरा : अरे, मैं जो कहना चाहता हूँ पहले सुन तो लो। मैं कह रहा था कि...।

दोनों : स्वीकार करते है कि हम सुखी हैं।

दूसरा : (दोनों की पीठ ठोक कर) शाबाश! जीते रहो, बेटा! बिलकुल तैयार। जीते रहो!

एक लड़की दौड़ती हुई कमरे में घुस आती है। घबरायी हुई है। सब उसकी तरफ़ देखते हैं।

लड़की : राजा साहब! राजा साहब!

दूसरा : क्या हुआ?

लड़की : पत्थर पड़ रहे है। कमरे मे पत्थर पड़ रहे है। बाहर से वे लोग फेंक रहे है। खिड़की से झांक कर देखिये।

दूसरा : अच्छा? वह वाली कविता बोलो तो। बोलो! उन लोगों को सुना-सुना कर बोलो। खिडकी के पास जाकर बोलो।

लड़की : (खिड़की के पास खड़ी होकर) बुलैट वंदना, रचयिता राजा साहब। (नमस्कार करके विज्ञापन पढ़ने की आवाज़ में।)

बुलैट! बुलैट! बुलैट!
हर प्रकार की अशांति का रामबाण
बुलैट! बुलैट! बुलैट!
करो इस्तेमाल एक बार ही
तुरत मिलेगा इससे लाभ
जल्दी और सदा के लिए
सारे रोग जायेंगे भाग।
बुलैट! बुलैट! बुलैट!
अच्छी कितनी, सस्ती कितनी
नकली माल नही है भाई
ट्रेडमार्क परखना चाहो
तो है कोई नही मनाही।
बुलैट! बुलैट! बुलैट!

दूसरा : वाह! वाह! (लड़की को हाथ के इशारे से बुला कर) प्यारी लड़की, अच्छी लड़की, आओ, आकर मेरे पास खड़ी हो जाओ। (लड़की के पास आने पर उसकी कमर में हाथ डालते हुए) क्यों भई, सड़क के लोगों ने कविता सुनी?

पहला और तीसरा खिड़की से देखते हुए ताली बजाते हैं।

तीसरा : जरूर सुनी है। कैसे नहीं सुनेंगे ? क्या कविता है !

पहला : काफी दूर हटते जा रहे हैं।

तीसरा : बिलकुल रेंज के बाहर।

दूसरा : तो नजरों से ओझल नहीं हुए अभी ?

तीसरा : नहीं, हुजूर !

दूसरा : हो जायेंगे—वह भी हो जायेंगे। इसे कहते हैं शब्दब्रह्म। (लड़की के सिर पर उँगली से थपथपा कर) है न, बिटिया ? (लड़की सिर हिलाती है।) अरे, उँगलियाँ तो बड़ी नर्म गुदगुदी हैं। जरा सिर तो सहला दो।

लड़की सिर पर हाथ फेरती है। पहले का चेहरा तमतमाया दीखता है पर क्रोध छुपा लेता है। अचानक पहला जोर से चिल्ला कर सिर पर हाथ रखे बैठ जाता है।

दूसरा : क्या हुआ ?

पहला : (कराहता हुआ-सा) सिर पर पत्थर लगा है—खून निकल रहा है। (लड़की की ओर देखता है। वह वैसे ही निर्विकार भाव से सिर सहला रही है।) देखती हो ! खून !

दूसरा जोर से बुलाने की घंटी बजाता है। तीसरा पीछे जा कर जल्दी से एक पुलिस की टोपी हैंगर से उतार कर पहन लेता है। पेटी कस लेता है। फिर दौड़ कर आ कर राजा साहब को सलाम करता है।

दूसरा : बाहर क्या हो रहा है ? प्रशासन के नाम पर कुछ भी नहीं कर पा रहे हो।

तीसरा : रोके दे रहा हूँ, सर !

दूसरा : इतने पत्थर इन्हें मिल कहाँ से रहे हैं ?

तीसरा : वे सारे के सारे पत्थर नहीं है, सर !

दूसरा : यह सब मुझको समझाने की जरूरत नहीं। उन चीजों को पत्थर जैसा ही समझो। दुश्मन के हथियार को जितना तुच्छ मान सकोगे, उतनी ही तो तुम्हारी मानसिक शक्ति यानी कि अस्त्र-शक्ति बढ़ेगी। बोलो, वे क्या मार रहे हैं ?

तीसरा : सिर्फ कंकड़ मार रहे है, सर !

दूसरा : वाह ! देखा न कैसे ठीक बोलने लगे ! बोलो, सात बार बोलो, बिलकुल याद हो जायेगा। बोलो न, शर्म कैसी ? नफरत, डर और शर्म, ये तीन बिगाड़ें कर्म। हाँ, यह बात हमेशा याद रखना। बोलो

सात बार।

तीसरा : (ताल से ताल मिला कर) कंकड़ मार रहे हैं, कंकड़ मार रहे... हैं...। (सात बार बोलता है।)

दूसरा : बहुत अच्छे ! मगर क्या कहना भूल गये बता सकते हो ? (लड़की से) तुम बताओ, यह क्या भूल गया ?

लड़की सिर खुजाती है और सोचती है।

दूसरा : कुछ लिखाई-पढ़ाई नहीं कर रही हो। (पहले से) यू, वह क्या कहना भूल गया ? (पहला सोचता है पर बता नहीं पाता।) सब एक से—कैसे पास होंगे, पता नहीं।

तीसरा : याद आ गया, सिर्फ़ 'कंकड़ मार रहे हैं' कहा है। उसके साथ 'सर' शब्द नहीं जोड़ा। सर, ऐप्रोप्रियट प्रेप्रोज़िशन के इस्तेमाल में बड़ी गलती कर बैठता हूँ, सर !

दूसरा : खैर, चलो याद तो आया। सात दफा 'सर' कहो सुर में। इससे याद हो जायेगा।

तीसरा : (सा रे ग म गाने की तरह सुर में आरोह) सर, सर... (अवरोह) सर, सर...।

दूसरा : वाह ! बहुत बढ़िया याद किया है। जाओ अब कंट्रोल रूम में बैठ कर ज़रा प्रैक्टिस कर लो। और हाँ, रानी बेटी, ओ रानी बिटिया !

लड़की : कहिये !

दूसरा : उसको तुम अपनी कविता की ट्रू कापी दे दो, बैठे-बैठे याद कर लेगा। पूरी याद करनी है। एक पंक्चुयेशन की भी गलती होने पर नंबर काटे जायेंगे। पूरे नंबर लेने हैं तुमको। तुम पर मेरी संस्था को बड़ा भरोसा है।

तीसरा आकर आज्ञाकारी छात्र की तरह राजा साहब के पैर छूता है। दूसरा उसकी ठुड्डी छू कर अपनी उँगलियों को चूमता है। फिर जाने क्या सोच कर अपनी उँगलियों को सूँघता है।

दूसरा : मीठी-मीठी गंध आ रही है। ठोढ़ी पर इत्र लगाया है क्या ?

तीसरा : (शर्मा कर) नहीं, सर, अंगूर का रस है, सर !

दूसरा : अच्छा, तो दारू की गंध है। एकदम ठोढ़ी भिगो कर चढ़ायी है। राजा बेटे ! लगता है गुड कंडक्ट का मैडल ज़बरदस्ती ही हथिया लोगे। होगा, तुमसे होगा। मन लगा कर काम करो, ज़रूर होगा। तुमसे बहुत उम्मीद है। तो बच्चे, अंगूर तो बड़े महँगे वाले लगते हैं। (तीसरा सिर हिलाता है।) हाँ, नज़र ऊँची रखा करो। टेस्ट ऊँचा रखा करो।

तभी तो रिज़ल्ट भी अच्छा होगा न। अच्छा जाओ। ठोढ़ी की गंध तो बड़ी मीठी है, भाई! मन उदास किये दे रही है जी।

तीसरा : एक दिन आपके घर आऊँगा, सर!

दूसरा : आना, जरूर आना। पर अकेले ही आना। सब के सामने तो सब बातें नही हो सकती न। अच्छा फिर आना... !

तीसरा : चलूँ, सर?

दूसरा : चलूँ, नही कहते। फिर मिलेंगे।

तीसरा चला जाता है। नयी पोशाक उतार कर पहली पोशाक में आ जाता है। इधर-उधर की चीजें झाड़ता-पोंछता रहता है। पहला भी वही करता है।

दूसरा : देखा लड़के को? आदर्श लड़का है। लिखाई-पढ़ाई के सिवाय कुछ नही जानता। (पहले से) पढ़ाई-लिखाई कैसी चल रही है?

पहला : चला रहा हूँ, सर!

दूसरा : (लड़की से) तुम?

लड़की : रात-दिन पढ़ तो रही हूँ। पर सब-कुछ याद नही रहता।

दूसरा : दरअसल पढाई-लिखाई क्या है, जानते हो? यह एक तरह का ऐसेस्मैंट है। जो कुछ मैं सिखा रहा हूँ उसे कहाँ तक ग्रहण कर सके हो, यही असली बात है। तुम पूछ सकते हो—आप क्या सिखा रहे हैं? तो जवाब है जो कुछ मैंने सीखा है, वही सिखा रहा हूँ। इसका मतलब हुआ—सबसे पहले किसी ने कुछ न कुछ सीखा था उसी का ऐक्सटेंशन है एजुकेशन। समझे?

पहला : हाँ, सर, एजुकेशन है ऐक्सटेंशन ऑफ़ लाइफ।

दूसरा : अरे रे रे, यही पर तो ग़लती करते हो। एजुकेशन है ऐक्सटेंशन ऑफ़ एजुकेशन, जिसका मतलब है रिपिटिशन ऑफ रिपिटिशन। यानी कि एक ही चीज को दुहराते-दुहराते चलते जाना। नही समझे?

लड़की : अब समझी, सर!

दूसरा : बिलकुल पानी की तरह साफ़ हो गया है न?

लड़की : सर, हमारा रिज़ल्ट कब निकलेगा?

दूसरा : जल्दी ही निकलेगा। लिखा तो बहुत है। मैंने देखा, बहुत सारे शीट लिये हैं तुमने। स्पीड अच्छी है तुम्हारी...!

लड़की : *सर, तीसरा प्रश्न ठीक याद नहीं था, सर, इसलिए...!*

दूसरा : हाँ, देखा है। बस रटा करो अच्छी तरह। तुम्हारा यही डिफ़ेक्ट है, कि बीच-बीच मे ओरिजिनल कुछ लिखना चाहती हो। अरे, अगर ओरिजिनल ही लिखना है तो फिर मैंने क्या सिखाया—और मेरी

किताबें वगैरह भी किस काम की ?

तीसरा : मैंने, सर, ओरिजिनल और रटा हुआ—दोनों को ही एवायड किया है।

दूसरा : राइट ! बुद्धिमान लड़के हमेशा ऐसा ही करते हैं। जहां तक मुझे याद है तुम्हीं को हाइऐस्ट नंबर मिले हैं।

तीसरा खुशी से पुलकित है। लड़की का मुंह उतर जाता है। वह सिर नीचा करती है। पहला एक बार उनको देखता है। अपनी कमर पर हाथ फेर कर कुछ महसूस करता है। काम करता रहता है।

दूसरा : अरे, क्या हुआ रानी बिटिया को ? मुंह क्यों लटक गया ? आओ, पास आओ ! (खुद ही पास चला जाता है। पीठ पर हाथ फेरता है।) तुम कर लोगी। प्रोग्रेस कर रही हो। (अपना बायां हाथ लड़की की कमर में डाल देता है।) बहुत जबर्दस्त प्रोग्रेस कर रही हो। (लड़की अपने को छुड़ाने को कोशिश करती है।) पर हां, शरारत बिलकुल नहीं करोगी। जितनी आज्ञाकारी बनोगी, देखना, उतनी ही उन्नति होगी। इस देश से यह गुण ही तो गायब होता जा रहा है। (दूसरा हाथ लड़की की गर्दन के पास फेरता जाता है। लड़की सिटपिटाती है।) प्यारी मुनिया...(गहरे आवेग से) प्यारी...!

लड़की : (डरी हुई) कहिये।

पहला उन दोनों को देखता है। चेहरा क्रोध से भर जाता है। तीसरा काम में मन लगाता है।

दूसरा : मेरी मीठी मुनिया ! गला बिलकुल खाली है—जेवर बिना यह गला बिल्कुल नहीं सोहता...।

लड़की : (छुड़ाने की कोशिश करते हुए) मुझे जाना है।

दूसरा : जाना, जरूर जाना पर उससे पहले...सुन रही हो ?

लड़की : क्या सुनूं ?

दूसरा : जो कह रहा हूं।

लड़की : क्या कह रहे हैं, कुछ कहें तब न !

दूसरा : तुम्हें सुनायी नहीं दे रहा ? ये मेरी उँगलियां तुम्हारी गर्दन पर खेल रही हैं। ये उँगलियां बोलती हैं। उनकी बातें तुम्हें सुनायी नहीं दे रही ? उँगलियां फुसफुसा कर क्या कह रही हैं ?

लड़की : मुझे छोड़ दीजिये।

पहला काल्पनिक छुरा कमर से निकालता है। राजा साहब के बिना जाने उनके पीछे आकर खड़ा होता है।

उत्तेजित है।

दूसरा : डर लगता है? मेरी उँगलियों को छूकर देखो। जितनी सख्त है, उतनी ही कोमल। प्यार से छू सकती हैं और गला भी घोंट सकती है।

लड़की : (रुआँसी होकर) छोड़िये, छोड़िये!

पहला छुरा उठाता है। और दूसरा तुरंत ही पीछे बिना देखे, अपना एक हाथ पहले की ओर बढ़ाता है। पहला अचानक रुक जाता है।

दूसरा : (पहले से) मेरा हंटर देना!

पहला धीरे-धीरे पीछे हट जाता है। डरा हुआ-सा चाबुक ला कर दूसरे को देता है। दूसरा उसकी ओर देखता है। पहला धीरे-धीरे जाकर 'नील डाउन' हो जाता है।

दूसरा : (पहले से) नॉटी ब्वॉय। (उसके पास जाकर खड़ा हो जाता है। पहला धीरे-धीरे उसको जूते पहनाता है।) नॉटी ब्वॉय!

अचानक दूसरा जैसे ही चाबुक उठा कर मारने जाता है वैसे ही एक तीखा यांत्रिक शब्द गूंज उठता है और बत्तियां बुझ कर फिर जल उठती हैं। अब दूसरा व्यक्ति राजा साहब की पोशाक में नहीं है। शुरू जैसी ही पोशाक है।

दूसरा : (हँसते-हँसते) क्यों, भाई! कमर में खोंसा छुरा कमर में ही रह गया। खून, खून, राजा साहब का खून! किसी काम के नहीं हो। राजा साहब का खून या तुम्हारा सिर!

तीसरा : लो, काम में लग जाओ। अगर राजा साहब आ गये तो बहुत बुरा होगा।

लड़की : (काम करती हुई सुर के साथ) बुलैट! बुलैट! बु-लै-ट!

पहला : (क्रोध से) चुप रहो—मैं कहता हूँ, चुप हो जाओ!

लड़की : (भौहें नचाकर) अच्छा! चुप हो जायेंगे।

पहला : हां, जायेंगे।

लड़की : जायेंगे, जायेंगे, मामा के घर जायेंगे।

दूसरा : (मजाक करता हुआ) मामा देंगे दूध मलाई।

तीसरा : पेट भर कर खायेंगे।

लड़की : जायेंगे, जायेंगे!

पहला : फिर सब बोलोगे तो मैं गला दबा दूंगा। देख लेना, मैं कहता हूं मुझे तंग न करो।

लड़की : गला दबाओगे? दबाओ न, जी! (पास जा कर उसकी पीठ से अपनी पीठ टिका कर खड़े होते हुए।) तुम आजकल मुझे जरा भी नहीं छूते हो।

पहला : हट जाओ, अच्छा नहीं लगता। हटो, मैं कहता हूँ, हटो !

लड़की : (लाड़ से) नही हटूँगी। कर लो क्या करोगे। मुझसे ज़रा अच्छी तरह से बोलते तक नही हो।

पहला चुप रहता है।

लड़की : (पहले की ठोढ़ी पर हाथ रख कर) गूँगा कहीं का, बोलता नही है, जंगली कही का ! बोलता नहीं है। प्यार भी नही करता गूँगा... जंगली...मेरा गूँगा.. मेरा जंगली...! (दूसरे की तरफ़ देख कर) बोल नही रहा।

दूसरा : (पहले से) चुप क्यों हो ? इस समय तुम्हें बोलना है।

तीसरा : बहुत सारे डायलॉग हैं।

दूसरा : खेल भूलते जा रहे हो क्या ?

तीसरा : ए.. बोलो न। तो फिर हम भी नही खेलेंगे। हमे क्या पड़ी है !

दूसरा : स्टार्ट डायलॉग !

तीसरा : (पहले से) ए...डायलॉग ! स्टार्ट योर डायलॉग, बोलो !

लड़की के चेहरे पर नाराजगी है।

दूसरा : स्टार्ट !

लड़की : (स्वाभाविक आवाज में) इस तरह से मैं नही खेलूँगी। मैं अलग ही सब-कुछ बोलती रहूँगी क्या ?

तीसरा : अभी बोलेगा।

लड़की फिर से अपना डायलॉग बड़बड़ा कर बोलना शुरू करती है।

दूसरा : बोलो न, जी ! खड़े-खड़े समाधि लगा ली है क्या ?

लड़की : (खुश हो कर)दरअसल मुझे न उसके कंधे पर अपना चेहरा रख कर इस तरह डायलॉग बोलते जाना बहुत बुरा नही लगता। चाहे जो भी हो, है तो वह पुरुष ही और मैं स्त्री...जाने क्या होने लगता है !

तीसरा : चुप, चुप ! अरे, यह भी गलत-सलत डायलॉग बोलने लगी है।

लड़की : सच, कुछ होता है। असल मे यह न मस्ती मे है, इसीलिए कुछ नही बोल रहा है।

पहला : (चिल्ला कर) गलत ! (लड़की के पास से हट जाता है।) कौन तुम्हे बार-बार मेरे पास आने को कहता है ?

लड़की : (तेज आवाज में) क्या कह रहे हो तुम ?

दूसरा और तीसरा, जैसे खेल शुरू हो गया हो, दबे पाँव चले जाते हैं।

पहला : क्या कह रहा हूँ ? गलत नही कह रहा।

लड़की : तुमने मुझे नही बुलाया।

पहला : इस दुनिया मे मैंने तुम्हें नही बुलाया।

लड़की : नही बुलाया तो अच्छा किया। फिर भी हम एक-दूसरे से मिलेंगे, साथ रहेंगे, प्यार करेंगे, जो मर्जी होगी वही करेंगे। देखो, ये सब फ़िलासफी अलग रखो...बहुत सुन लिया.. तुमने चाहा नही था फिर भी तुम्हारा जन्म हुआ,...तुमने चाहा नहीं फिर भी मरना होगा...इन सब बातों पर बहस करना छोड़ कर...हम है...बहुत दिन जियेंगे...कोशिश करके अच्छी तरह से जियेंगे.. यही बहुत बड़ा सत्य है...समझे ?

पहला : अच्छी तरह से जियेंगे ! कौन दे रहा है जीने ?

लड़की : कौन नही दे रहा है ?

पहला : कौन नहीं दे रहा, यह तुम भी जानती हो, मैं भी जानता हूँ...ढोंग रचने की कोई जरूरत नही।

लड़की : तुमसे मैंने हजार बार कहा है कि इस शब्द का इस्तेमाल न किया करो। अच्छी भाषा बोलने मे क्या पैसे लगते हैं ?

पहला : बहुत दिन पैसे नही होते तो अच्छी भाषा का टेस्ट भी नहीं रहता।

लड़की : पैसा तो मेरे पास भी नहीं है।

पहला : कहीं न कही तुम्हारा भी टेस्ट बिगड़ा ही है।

लड़की : क्या तुम सीरियसली विश्वास के साथ यह कह रहे हो ?

पहला : तुम कौन दुनिया से अलग हो जो तुम्हारे लिए ऐसा नही सोचूँगा ?

लड़की : प्रमाण दे सकते हो ?

पहला : हाँ दे सकता हूँ, पर रहने दो यह सब।

लड़की : नही, रहने नही दिया जायेगा।

पहला : फिर मैं नही कहूँगा।

लड़की : तुमको कहना ही पड़ेगा।

पहला : पड़ेगा ? क्यों ?

लड़की : कुछ बातें ही ऐसी होती हैं जिनको शुरू करके खत्म न करना बद-तमीज़ी मानी जाती है। मैंने क्या बुरे टेस्ट का काम किया है, तुम्हें बताना ही पड़ेगा।

पहला : तुम राजा साहब को देख कर मोहित हो गयी थी।

लड़की : तुम नही हुए थे ?

पहला : हुआ था, पर उसके साथ-साथ एक और इच्छा थी, एक और संकल्प जाग उठा था मन में। पर तुम्हारी तरह अपने को लुटा नही दिया था।

लड़की हँसती है।

लड़की : लुटाया नही ? पिछले कुछ वर्षों से जाने कहाँ से एक छुरा ले आये

हो और लगातार उसको मारने की कोशिश कर रहे हो। पर क्या किसी दिन यह खयाल किया है कि तुम्हारा छुरा तेज भी है या नहीं, या कि यह सिर्फ एक खिलौना ही है ? दरअसल तुम्हारे हाथ में कोई छुरा है भी या नहीं, क्या यह जाँच कर कभी देखा है ? तुम्हारे सिवा और किसने देखा है यह छुरा ? कौन डरा है इससे ? राजा साहब के इतने बड़े राज्य मे तुम्हारा यह मामूली-सा छुरा किस काम का ?

पहला : (असहाय-सा) तुमने तो देखा है, मेरे हाथ मे छुरा था।

लड़की : मेरे देखने से ही तो सब ठीक नही हो जाता।

पहला : तुम्ही बताओ, बहुत तेज नही है मेरा छुरा ? बताओ न।

लड़की : पता नही।

पहला : देखना, मैं राजा साहब को जरूर मार डालूंगा। एक न एक दिन जरूर मार सकूंगा।

लड़की : राजा साहब को तुम पहचानते नही हो।

पहला : पहचानता नहीं ? जिसको मैं मारना चाहता हूँ, घायल करना चाहता हूँ, जिससे मैं बदला लेना चाहता हूँ, जिसके लिए मेरे मन मे जन्म से गुस्सा है, उसको नहीं पहचानूंगा ?

लड़की : राजा साहब ने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है ?

पहला : वह मेरी पसलियों को हटा कर मेरे दिल को चुराना चाहता है। उँगलियों के पोरो पर ताले डाल देता है। मैं मुट्ठी बद नही कर पाता, कोई चीज पकड़ नही पाता। जानती हो ? दीवार पे लात मारने पर उससे निकलने वाली आवाज आजकल मुझे सुनायी नहीं देती।

लड़की : तुमको राजा साहब इनाम देंगे।

पहला : मजाक कर रही हो ?

लड़की : मजाक क्यों करूंगी ? इस देश में तुम्हारी तरह खूबसूरती से और दूसरा कोई रो नहीं सकता। जो खूबसूरती से रोता है, राजा साहब हर साल उसे इनाम देते हैं।

पहला : तुम मेरी तरफ़ देखो। सचमुच क्या मैं रो रहा हूँ ?गुस्से से मेरी आँखें लाल नही हो रही है ?

लड़की : आँखें लाल होने से राजा साहब का हंटर। याद है ?

पहला : मैं भी हंटर बनाऊँगा।

लड़की : बनाओगे, पर मार सकोगे ? रहने दो यह सब। अब उठो। बहुत देर तक बातें की है, रोये हो, गुस्सा किया है ..तुम्हारे आज के टाइम-टेबल मे जो कुछ था, सब पूरा हो गया...अब उठो !

पहला : मेरा इतना मजाक न उड़ा कर अगर मेरे लिए थोड़ी-सी हमदर्दी

तुम्हारे मन में होती।

लड़की : क्या कहा, हमदर्दी नहीं है ? आखिर तक तुम्हारा साथ किसने दिया ? राजा साहब के यहाँ से किसने तुम्हें चले आने को कहा ? किसके कहने से तुम चले आये ?

पहला : दरअसल, मैं गुस्से से इतना भरा हुआ हूँ कि गलत बातें करने लगता हूँ। गलत काम करता हूँ। जानती हो राजा साहब के यहाँ से चले आने पर भी लगता है जैसे उनकी छाया हमारी पीछा कर रही है... हम लोगों को ढूँढ रही है...जैसे उनके चंगुल से हम कभी छूट कर नहीं निकल सकते।

लड़की : हम राजा साहब से बहुत दूर, और भी दूर चले जायेंगे...वह हमें ढूँढ नहीं पायेंगे।

पहला : राजा साहब जरूर ढूँढ निकालते हैं।

एक मोटर का हार्न सुनायी देता है।

लड़की : राजा साहब की मोटर का हार्न नहीं है ?

पहला : ताज्जुब है ! देखा ? कैसे ढूँढते-ढूँढते आ पहुँचे ? अब मैं भी नहीं छोड़ूँगा। जिसके चंगुल से छुटकारा नहीं है...उसके साथ आखिरी हिसाब-किताब हो जाना ही ठीक है।

लड़की : ठहरो, पहले देख तो लूँ कौन है। (बाहर देख कर) मोटर से उतर रहे हैं। नहीं जी, देखने में राजा साहब की तरह तो नहीं लगते। हाँ ! राजा साहब नहीं हैं, समझे। लेकिन काफ़ी बड़े आदमी लगते हैं। शानदार पहनावा...साथ दूसरा एक आदमी...इधर ही आ रहे हैं।

पहला : राजा साहब क्या देखते ही पहचाने जा सकते हैं ? वह आदमी अनगिनत वेश बदलता है। जाओ, हम पहले छिप जाते हैं। बाद में आयेंगे। यह आदमी चाहता क्या है, पहले यह पता लगाते हैं।

लड़की : चलो !

उन लोगों के बाहर जाने से पहले ही दूसरा एक दूरबीन आँखों में लगाये प्रवेश करता है। कीमती राजसी वस्त्र। उसके पीछे तीसरा सँकरी पेंट और बड़े प्रिंटों वाली बुशर्ट पहने, गले में रुमाल बाँधे, हाथ में एक चमड़े का बैग लिये आता है।

दूसरा : (आँखों में दूरबीन लगाये) कौन जा रहा है ? हाल्ट, हाल्ट !

वे रुक जाते हैं। दूसरा कागज से एक हवाई जहाज बना कर उड़ाता है। स्टेज के एक कोने पर उसके गिरते ही तीसरा दौड़ कर वहाँ एक झंडा गाड़ देता है।

दूसरा : रुस्तम !

तीसरा : जी हुजूर !

दूसरा : झंडा लहरा रहा है। नही ? हमारा राज्य थोड़ा-सा और बढ़ गया है न ?

तीसरा : बढ़ा तो है, हुजूर !

दूसरा : धीरे-धीरे बढने में बड़ा समय लगता है न ? खैर, लगने दो। धीरज ही सफलता की कुंजी है। (दूरबीन आंखों में लगा कर) कुछ दूर दो-दो आदमियों को रुकने के लिए कहा था न ? हां, वे, वही आदमी तो लग रहे है। (मुट्ठी में कुछ लालीपाप भर कर, हाथ बढ़ा कर मुंह से चच्-चच् की आवाज करते हुए) अरे, इधर आओ, आओ न, बहुत मीठा है। जितना चूसोगे मुंह उतना ही रस से भर जायेगा। (वे चुप हैं। दूसरा देखता रहता है।) कैसे लोग है ये, रुस्तम ? आ ही नहीं रहे हैं। वह कविता सुनाओ जरा !

तीसरा . लालीपाप, लालीपाप, लालीपाप
खाने मे है मजेदार खाओ भाई टपाटप
सारी दुनिया का सबसे बढ़िया खाजा
जिद्दी मत बन खाले,
नहीं तो पछतायेगा राजा।
जो खाये इक बार, उसका होवे बेड़ा पार
साथ मिले उपहार
शहद का एक बड़ा-सा छत्ता।

तीसरा : (फेरी वाले की तरह हांक लगाते हुए) लालीपाप चाहिए, लालीपाप ! एक पैकिट खरीदने पर साथ में शुद्ध स्वादिष्ट शहद की एक बोतल... छोटे-बड़े हर साइज के पैकिट मिलेंगे। अपने लिए और अपने बच्चों के लिए ले जाइये। लालीपाप, लालीपाप, लालीपाप...इसके अलावा और भी मिलेंगी सोहराब एंड रुस्तम कंपनी की मोमबत्तियां। अंधेरे में रहने वाले मनुष्य का एक मात्र सहारा। हर जगह आपने इस मोमबत्ती की प्रशंसा सुनी होगी।

दूसरा : क्यों भाई, रुस्तम, आ तो नहीं रहे हैं ! भाषण दो।

तीसरा : (काल्पनिक माइक पकड़ कर) हैलो, माइक टैस्टिंग वन-टू-थ्री-फोर। हैलो, दोस्तो, क्या आप लोग मुसीबत में नहीं हैं, गरीब नहीं हैं, दुखी नहीं हैं ? थोड़ा-सा सहारा, थोड़ा-सा सुख, थोड़ा-सा आराम। इन सब चीजों की मांग इंसान की तरह नहीं करेंगे ? हम आपको बुला रहे हैं। सोहराब एंड रुस्तम कैंडल कंपनी मे आइये, अंधेरे में रोशनी

जगाइये।

दूसरा : जोश ! शब्दों में जोश भर दो !

तीसरा : आइये, आगे आइये, भाइयो, आपका हक़ आपसे कौन छीन सकता है ? इसका मतलब यह नही कि आप भूख को बढ़ने दें...भूख...विवेकहीन, बुद्धिहीन भूख...पागलपन है। बेमतलब गर्मागर्मी से भूख नही मिटती...अराजकता आती है। संयम रखिये। सभ्यता की पहली जरूरत है संयम। घर मे सब संयम का अभ्यास कीजिये...भूख आसानी से मिट जायेगी।

दूसरा : उनके कान में जूं तक नही रेंग रही...भाषा में कवित्व लाओ।

तीसरा : (सुरीली आवाज में) अस्त होते मेघों का सोना पिघल कर बिखर रहा है सारे आसमान मे। विदा ले रहा है सूर्य...अंधकार...गहरा अंधकार बढ़ा आ रहा है ऊँची लहरों के साथ। कौन रक्षा करेगा ? कौन जगायेगा ? कौन सुनायेगा आशा का संदेश ? सोहराब एंड रुस्तम केंडिल मैन्यूफैक्चरिंग वर्क्स मे आइये। हम हर प्रकार की मोमबत्तियाँ बेचते है, मोटी, मँझोली, पतली। इस दुनिया से बिजली लुप्त हो जाने पर...शरीर से बिजली लुप्त हो जाने पर...हृदय में बिजली की शक्ति कम होने पर...कमजोर पड़ते हुए मनुष्य को हम बुला लेते हैं। आइये, मोमबत्ती खरीदिये या फिर हमारे कारखाने में भर्ती हो जाइये। बेकारी के युग में बुला-बुला कर नौकरी देना...नही मिलेगा...मार्केट में कही नहीं मिलेगा। मोमबत्ती खरीदिये या फिर हमारे कारखाने मे भर्ती हो जाइये, मोमबत्ती के उत्पादन में हाथ बँटाइये। मासिक वेतन पचास लालीपाप और दो शीशी छत्ते से निकाला हुआ ताजा शहद। जब भी मुंह कड़वा लगे, एक चम्मच शहद चाट लीजिये...शांति-शांति-शांति...!

पहला और लड़की आगे बढ़ते हैं।

दूसरा : आ रहे हैं। आ रहे हैं।

पहला : आप लोग बुला-बुला कर नौकरी दे रहे है ?

दूसरा : हाँ भाई, नौकरी चाहिए ?

लड़की : क्यों नही चाहिए ? मिल ही कहाँ रही थी ?

दूसरा : सबको थोड़े ही देते हैं...तुम लोगों को देख कर लगा, बहुत नीडी हो। तो फिर चले आओ। सभी कुछ तो सुन लिया।

पहला : जाने क्यों कुछ शक हो रहा है। इतनी आसानी से नौकरी पाना...!

दूसरा : नौकरी तो तुम्हें करनी ही पड़ेगी। एक बार घुस पड़ो, आराम से रहोगे। आराम न मिले तो छोड़ने से कौन रोकता है ? (तीसरे से)

बिटिया अकेली रह गयी है, देखो न, क्या चाहती है ? शीशा, चूड़ी, स्नो, क्रीम...क्या चाहिए इसे, देखो !

तीसरा : (सुर से गाते हुए)
शीशा, चूड़ी क्रीम हिमानी
मन ही मन चाहो तुम रानी !
जितनी मर्ज़ी ले लो हम से
दाम नहीं लेंगे कुछ तुम से
इन लाल रसीले होंठों की
मुस्कान ही काफी है रानी !

दूसरा : घूम-घूम के बोलो, भई, घूम-घूम के !

तीसरा अब नाच कर गाता है। उन दोनों को अच्छा लगता है। लड़की हँसती है।

तीसरा : (छंद बोलता हुआ लड़की के पास आ कर)
हाय यह हँसी, लाये उदासी
अपने ही हाथों डालूंगा
अपने ही गले में फाँसी।
मर के मैं बन जाऊँ सोना
घर सुनार के जाऊँ
सोने की नथ बन कर रानी
तेरी नाक सजाऊँ।

लड़की : (हँसते-हँसते) बड़े मजे में है ये लोग। है न ? हम लोगों को कहीं-न-कहीं तो जाना ही पड़ता ..इन्हीं लोगों के यहाँ चलें।

दूसरा : वहीं तो। यहीं तो आओगे...इसलिए ही तो इधर आना हुआ, भाई ! देख लेना, बिटिया...नाच, गान, रस, सुख से भरपूर। तुम भी पाँवों में घुँघरू बाँधे नाचने लगोगी। देख लेना, बिटिया !

पहला : इतनी मौज है। फिर भी आप लोगों को क्यों ढूंढ़ रहे हैं ? लोगों की तो भीड़ इकट्ठी हो जानी चाहिए आपके दरवाज़े पर।

दूसरा : क्या करें, लोग बेवकूफ़ जो ठहरे। नौकरी मेरी करेंगे और नियम अपना चलाना चाहेंगे...यह बात क्या ठीक है, भाई ?

लड़की : आपके नियम-कानून बहुत सख्त हैं क्या ?

दूसरा : बिलकुल नहीं। जो चीज जहाँ पड़ी है, वहीं पड़ी रहेगी, ज़रा भी हिलाना-डुलाना नहीं है। दस लोग तुम्हारे कान भरेंगे, यह हटाओ, वह हटाओ...तुम चुपचाप बैठे रहोगी। फिर तुम्हारी नौकरी कौन हड़प सकता है...कौन सुख छीन सकता है ?

पहला : आप कौन हैं ?

दूसरा : क्यों, भाई ? यह प्रश्न क्यों ? अरे ओ, रुस्तम ! यह पूछता है, मैं कौन हूँ ? (हँसता है) तो फिर तैयार हो जाओ।

पहला : आपको पहचान गया हूँ।

लड़की : आप, आप राजा साहब हैं।

पहला : अब हम दोनों एक बार फिर आमने-सामने आये हैं।

कमर में खोंसा हुआ काल्पनिक छुरा निकाल कर वार करने लगता है। रुस्तम उसे पकड़ लेता है।

दूसरा : यह क्या कर रहे हो ? बुद्धू लड़के ! रुस्तम, रेडी !

बत्ती बुझ जाती है। फिर जलती है तो पहला एक अपराधी के कठघरे में खड़ा दिखायी देता है। कठघरा बहुत-सी बंदूकों की नलियों से तैयार है। चारों तरफ से संगीनें उठी हुई हैं। कोने में डरी हुई लड़की खड़ी है। और कोई नहीं है।

पहला : मी लार्ड ! इस बार भी मैं खून नहीं कर सका। मुझे सजा दीजिये।

पर्दा गिरता है।

दूसरा दृश्य

मंच पहले की ही तरह है। सिर्फ़ दो फ़ीते मंच के पीछे की ओर से सामने की ओर दो स्टैंड के सहारे बँधे हैं जिससे मंच तीन हिस्सों में बँट गया है। बीच के हिस्से में कंधे पर बंदूक लिये एक संतरी है। दोनों तरफ़ के दो हिस्सों में से पहला और लड़की बातें कर रहे हैं। तीसरा संतरी की भूमिका में है।

लड़की : ए...सुनते हो ? क्या हम लोगों को छोड़ेंगे नहीं ?

पहला : मुझसे पूछने से क्या फायदा ?

लड़की : मुझे अच्छा नहीं लग रहा।

पहला : अच्छा !

लड़की : मैं दीवार पर सिर दे मारूँगी, कहे देती हूँ।

पहला : थोड़ी देर पहले मैंने भी मारा था...ऐसा मत करना। बड़ी ज़ोर से ठक्-ठक् आवाज होती है और माथे में दर्द भी होता है।

लड़की : फिर क्या करूँ, बताओ न ?

पहला : मैं क्या कर रहा हूँ ?

लड़की : तुम ? तुम आँखें बंद किये बैठे हो।

पहला : तुम भी यही करो।

लड़की : अच्छा नहीं लगता। मैं तुम्हारे पास आना चाहती हूँ।

पहला : आँखें मूँदे रहो। कुछ नहीं दिखायी देगा। साथ ही थोड़ी-थोड़ी डोलती रहो—थोड़ी देर बाद नींद आ जायेगी।

लड़की : मैं तुम्हारे पास आऊँगी।

पहला : बस, ज्यादा ज़िद न करो।

लड़की : जहर पी लूँगी, हाँ।

पहला : मैंने पी कर देखा है। पीते ही जीने की इच्छा होने लगती है।

लड़की : भाग जाऊँगी।

पहला : अब तक कितनी बार कोशिश की ?

लड़की : सिपाही जी को जरा कहो न।

पहला : उसे सुनायी नही देता।

लड़की : देता है। जानते हो, मेरे साथ उस वक्त बातें कर रहा था।

पहला : कैसी बातें ?

लड़की : पूछ रहा था, रात कितनी बीती ? मैंने कहा, अभी तो दोपहर है। उसने कहा, तो फिर सूरज क्यों निकला है ? मैंने कहा, सूरज तो निकलेगा ही। वह ठठा कर हँसा और बोला, ऐसा दिमाग़ पाया है तभी तो क़ैद भुगत रही हो।

पहला : क्या समझीं ?

लड़की : समझी कि अब से सब उल्टा कहूँगी। दिन को रात और रात को दिन।

पहला : अच्छा है।

लड़की : सुनो, सिपाही जी को ज़रा प्यार से कह कर देखूँ ?

पहला : देखो।

लड़की : तुम कुछ दिलचस्पी नही दिखा रहे हो। खुद भी तो ज़रा कोशिश करनी चाहिए।

पहला : सिर्फ़ दीवार तोड़ना ही बचा है, बाकी सब कुछ आज़मा लिया है।

लड़की : ज़रा प्यार से बोल कर देखो न। जैसे मैं पिक्चर जाने से पहले पापा से बोलती थी। किसी तरह छोड़ेंगे ही नही, बस। पिक्चर के बहाने तुमसे मिलने जाती। ठीक ऐसे मौक़े पर रोक लेते। तब फिर बड़ी चालाकी से परमिशन ले ही लेती थी।

पहला : परमिशन तुम्हें मिलती नही थी।

लड़की : क्या कहते हो ? नहीं मिलती थी ? तो फिर तुमसे मुलाक़ात कैसे होती थी ?

पहला : मुझसे मिलने की परमिशन तुम्हें नही मिलती थी। वे तुम पर विश्वास करके तुमको जाने देते थे—और धोखा खाते थे। तुम धोखा देती थीं, और क्या ?

लड़की : *मजबूरी मे धोखा देती थी। इससे पाप नहीं होता।*

पहला : पाप-पुण्य की बात नही। वह मुझको पसंद नही करते थे। पर फिर भी तुम आती थीं। कैसा दुख का समय था वह ! तुम्हें उन दिनों कितनी परेशानी हुई, मुझे अब भी सोच-सोच कर तकलीफ़ होती है।

लड़की : पापा न, ज़रा कड़े स्वभाव के आदमी है। पर असल में...।

पहला : तुम्हारे पापा बहुत अच्छे हैं तभी तक जब तक तुम उनके नियमों के के दायरे के अंदर हो।

लड़की : तुमने फिर बहस शुरू कर दी। यहाँ से भागने की कोशिश के बजाय मेरे पापा के पीछे पड़े हो।

पहला : ठीक है। मैं आँखे बंद कर रहा हूँ। तुम पापा से जैसे कहती थीं, उसी तरह सिपाही जी से भी कह देखो। बात बन जाये तो मुझे भी छुड़ा लेना।

लड़की : सच ? कहूँ ?

पहला : *कहो। पर बिलकुल 'पापा' ही मत कह डालना। जैसे पापा से बातें कर रही हो वैसे—लाड़ली बिटिया के-से हाव-भाव से। कहीं सिपाही जी मज़ाक समझ कर बिगड़ने न लगें? लो, मैंने आँखें बंद कर ली। स्टार्ट !*

लड़की : **(चेहरे पर लाड़ली बिटिया के-से भाव से सिपाही जी की ओर बढ़ते हुए)** सो रहे हैं ? **(कोई उत्तर नहीं मिलता)** पता नहीं, क्यों दोपहर को भी सोते रहते हैं, हाँ।

तीसरा : **(पिता की-सी भारी आवाज में)** कौन मुन्नी ? कुछ कहा तूने मुझसे ?

लड़की : इस कमरे में तुम्हारे अलावा और है कौन ? और किसके साथ बोल सकती हूँ ?

तीसरा : क्या कह रही है ?

लड़की : ज़रा बाहर जाऊँगी।

तीसरा : बाहर क्या है ?

लड़की : होगा क्या ? काम है मुझे। इसलिए जाना चाहती हूँ।

तीसरा : परमिशन लेने आयी है ? पर क्या खास काम है, वह तो नहीं बताया तूने। एनि थिंग प्राइवेट ? **(लड़की साड़ी का छोर अपनी उँगली पर लपेटती है।)** बोलो ! आई हेट साइलेंस।

पहला : एक दिन तुम हिम्मत करके सच बोली थी। वही दिन याद करो और तड़ाक से सच बोल दो।

लड़की : मैं उससे मिलने जा रही हूँ। अपाइंटमेंट है।

तीसरा : आई सी। जा सकती हो, पर मैंने तुम्हें मना किया था। मेरी इजाज़त के बिना भी तुम जा सकती हो।

लड़की : क्यों ? तुम इजाज़त दोगे क्यों नहीं ?

तीसरा : **(चिढ़ कर)** बहस मत करो।

लड़की : बहस कहाँ कर रही हूँ। मैं तो तुमसे पूछ रही हूँ।

पहला : राइट !

तीसरा : पूछने का एक नरम तरीका भी होता है। तुम्हारी आवाज़ में इतना

गुस्सा क्यों है ? एक नाकारा लड़के से वक्त पर मिलना नहीं होगा, ऐसी छोटी-सी बात के लिए सारी तमीज को ताक पर रखने में तुम्हें कोई संकोच नहीं हो रहा ? क्या तुम इसी घर की लड़की हो ? मुझे शक होता है।

लड़की : तुम्हारा शक बहुत बढ़ गया है, इसीलिए आज इतनी बातें करनी पड़ रही हैं।

तीसरा : किसी की इतनी भी बातें मैंने कभी नहीं सुनी। तुम जा सकती हो।

लड़की : जिंदगी-भर तुम्हारी मर्जी के मुताबिक चली हूँ ! मैं भी तो इंसान हूँ, मेरा अपना कुछ भी नहीं ?

तीसरा : यह तुम्हारा प्रश्न है या रेवोल्यूशन का फैशन ? इस घर में जो कुछ जहाँ है वैसा ही रहेगा। ऐसे ही चलता आ रहा है। उससे हमारी मर्यादा कुछ घटी नहीं। तुम्हारा इम्तहान पास है, बेकार उत्तेजित होकर अपना नुकसान मत करो। और सुनो, अब तक इस नियम से ही पली-बढ़ी हो, आज अचानक नियम को तोड़ कर धूल में नहीं मिलाया जा सकता—यह तो कृतघ्नता होगी। तुम बड़ी हो गयी हो। अब सब कुछ समझना सीखो।

लड़की : ठीक है। मैं जा रही हूँ।

तीसरा : कहाँ ?

लड़की : इसी घर में।

तीसरा : इस घर में एक रसोई है, वहाँ जाकर दो कप चाय बनाओ। इस मेज़ पर लाकर रखो। दोनों गप्प करेंगे। ठीक ? **(लड़की चुप है।)** चुप क्यों हो ? बोलो, ठीक है ?

लड़की : लाती हूँ।

लड़की सिपाही के पास से हट जाती है। संतरी पहले की तरह चलने लगता है, निर्विकार है।

पहला : दो कप चाय ही लायी थी तुम। उसके बाद बातें। बातों के बाद हँसी। फिर पापा का सिर दबाना। वाह, क्या खूब !

लड़की : इसके सिवाय और करती ही क्या ?

पहला : खून करती। सिर दबाते-दबाते एकदम खून।

लड़की : पापा का ?

पहला : नहीं। अपने पापा के उद्दंड, अड़ियल स्वभाव का। घर में किसी चीज को ज़रा-सा भी इधर से उधर नहीं रखने देंगे। तुम यह सब क्यों मानती रही। तुम्हें चाहिए था उनका खून करती। एक संगीन उठाये वह सज्जन तुम्हारा पहरा दे रहे हैं और तुम गरमागरम चाय पी रह

हाँ। खून करना नहीं आता तुम्हें ?

लड़की : तुम्हारी तरह ? हाथ में एक अदृश्य छुरा लेकर उछल-कूद करते रहो।

पहला : आखिरी दृश्य मे छुरा अदृश्य नही रहेगा। मैं जीत कर रहूँगा।

लड़की : ऊँह, जीतोगे ! जेल के सीखचों में बंद सड़ते रहोगे। जीतोगे ! जिसे जीतना होता है वह इन दीवारों को लातों से चकनाचूर कर देना चाहता है। उसकी दोनों आँखें जलती हैं, हाथों की दोनों मुट्ठियाँ भिच जाती हैं। वह तुम्हारी तरह बड़बोला बन कर, आँखें मूँद कर ऊँघता नही रहता।

पहला : सुनो, हम एक काम कर सकते हैं। अखबार के दफ़्तर फ़ोन करें। यह खबर वे जरूर छाप देंगे। कोई न कोई हमें छुड़ाने जरूर आयेगा।

लड़की : तुम ठीक कहते हो। कम से कम लोगों को पता तो लगे कि दो इंसान इस तरह कैद में पड़े सड़ रहे हैं।

पहला एक काल्पनिक फ़ोन पर नंबर मिलाता है। लड़की दूसरी तरफ़ उत्सुक खड़ी है। संतरी कंधे पर बंदूक रखे शांत भाव से चहलक़दमी कर रहा है।

पहला : (फ़ोन उठा कर) हैलो, हैलो ! कोई उठा नही रहा। (जोर से) हैलो, हैलो !

संतरी, यानी तीसरा बंदूक टेबल पर रख देता है। एक फ़ाइल खोल कर टेबल पर बैठता है। आँखों पर एक मोटा चश्मा चढ़ाता है। काल्पनिक रिसीवर कान के पास ले जाता है।

तीसरा : (भारी गंभीर आवाज में) हैलो !

पहला : ये अखबार का दफ़्तर है ? मैं जरा मालिक के साथ बात करना चाहता हूँ।

तीसरा : बोल रहा हूँ।

पहला : (लड़की से) मिल गया।

लड़की : सब समझा कर कह डालो।

पहला : आप लोगों को एक खबर देना चाहता हूँ।

तीसरा : कहिये।

पहला : हम दो लोग कैद हैं। इस तरफ के कमरे मे मैं और उस तरफ के कमरे मे एक महिला।

तीसरा : बातचीत होती है ?

पहला : दूर ही से।

तीसरा : आँखें मिलाने में कोई रोक-टोक तो नही है ?

पहला : जी, नहीं।

तीसरा : इस तरह की क़ैद की जिंदगी तो अच्छी ही है।

पहला : हम बहुत दिनों से बाहर नहीं निकल पा रहे हैं।

तीसरा : क्या ज़रूरत है ?

पहला : क्या मतलब ? क्या ज़रूरत ? क्या इसी तरह बंद रहेंगे ? यह खबर मेहरबानी करके छापिये न।

लड़की : बोलो न, यह ज़रूरी है कि सब यह खबर जान जायें ?

पहला : अगर ये खबर छप जाये तो सब लोगों को पता चल जायेगा। कोई न कोई तो हमारी सहायता कर ही सकता है।

तीसरा : आप किसके आदमी हैं ?

पहला : किसका आदमी हूँ ? मतलब ? इस देश का आदमी हूँ।

तीसरा : इन बड़ी-बड़ी बातों से कुछ काम नहीं बनता। मैं इस दुनिया का आदमी हूँ। इससे दुनिया का क्या बनता-बिगड़ता है ? आप अपना अख़बार पहले चुन लीजिये।

पहला : पर क्या यह खबर नहीं है ? आप तो खबरें ही छापते हैं। यह एक महत्त्वपूर्ण खबर है।

तीसरा : देखिये, टू टैल यू फ्रैंकली हमारा अख़बार बड़े-बड़े विज्ञापन देने वालों की कृपा से ही चलता है। उनकी ज़रूरत के बाहर की ख़बरें छाप कर अपने अख़बार को चौपट तो नहीं कर सकता न। मेरी राय का मतलब ही है उनकी राय। आपका अपराध क्या है ?

पहला : अटेम्प्टेड मर्डर।

तीसरा : मर्डर ! किसका खून करना चाहा था आपने ?

पहला : राजा साहब का। आप पहचानते हैं उन्हें ?

तीसरा : बहुत अच्छी तरह से पहचानता हूँ। मैं उन्हीं की तरफ़ से बोल रहा हूँ।

पहला : क्या कहा ?

तीसरा : मैं उन्हीं की तरफ़ से बोल रहा हूँ।

फ़ोन रख देता है और चश्मा उतार कर बंदूक उठा लेता है और चुपचाप चहलक़दमी करने लगता है।

पहला : मारे गये !

लड़की : क्या हुआ ?

पहला : जिसको फ़ोन किया था, वह राजा साहब का ही आदमी था।

लड़की : राजा साहब का आदमी ?

पहला : हमारी क्या हालत होगी, सोचा है ? सिर्फ़ क़ैद ही नहीं, इससे भी बड़ी सज़ा मिलेगी।

लड़की : जैसे भी हो हमें भागना ही होगा।

दूसरा प्रवेश करता है। सँकरी पेंट। सर के बाल काफ़ी सफ़ेद हैं। रूमाल से चेहरा पोंछ रहा है।

दूसरा : अहा हा ! कहाँ गये मेरे बच्चे ? और कितने दिन की है यह ज़िंदगी ? फूटी आँखों से यह भी देखना पड़ा ! कहाँ हो, बच्चो ?

पहला : हमें ढूँढ रहे है ?

लड़की : (आकुलता से भरी आवाज में) ये रहे हम।

दूसरा : (जैसे बहुत दूर की कोई चीज देख रहा हो इस तरह माथे पर हाथ रख कर) कहाँ, कहाँ हो, जी ?

पहला : (उत्सुकता से) ये रहे, इधर देखिये।

लड़की : आपके पास ही तो खड़े हैं, आपको दिखायी नही दे रहा ?

दूसरा : दिखायी क्यों नही देगा ? पर देखा नही जा रहा। यह तो आँखों से देखा नही जाता, बेटे ! मेरे बच्चे क़ैद भुगत रहे हैं और मैं हूँ कि देशोद्धार के लिए भाषण दे रहा हूँ। देश की युवाशक्ति ही अगर जेल मे सड़ेगी—तब तो पूरे देश को ही जेल मे बंद समझना चाहिए। (संतरी से) कहाँ हो, जी...ज़रा आँखें खोल कर देखो न, मैं आ गया हूँ। (संतरी सलाम करता है।) सलाम-वलाम बाद में करना। पहले बच्चों को रिहा कर दो। कहाँ हो, बच्चो ? (दोनों को इशारे से बुलाता है।) आओ, आओ, दौड़ कर बाहर चले आओ।

पहला : दरवाज़ा खोलते ही हम बाहर आ जायेंगे। बाहर निकलने के लिए तो पागल हो रहे हैं।

लड़की : इस दुनिया मे आप जैसा अपना हमारा कोई नही है।

संतरी दोनों तरफ़ की डोरी खोल देता है। वे दोनों तेजी से निकल आते हैं। संतरी चला जाता है।

लड़की : आपने हमें बचा लिया। किसी देवदूत की तरह आप आ पहुँचे है।

पहला : आप न आते तो शायद हम इस जेलखाने मे ही सड़ते रहते।

लड़की : इनके पैर छुओ !

दोनों पैर छूते है।

दूसरा : अहा-हा ! लगता है जैसे मेरे पैरों पर दो फूल गिरे हैं। उठो, उठो, मुक्ति तुम्हे नही...यहाँ...(अपनी छाती दिखा कर) जो साँस अटकी हुई थी, अब उसे मुक्ति मिली है। आह...!

पहला : अगर बुरा न मानें तो एक बात पूछूं ?

दूसरा : पूछो।

पहला : बिना माँगे ही इतनी दया दिखा रहे हैं। यह अयाचित करुणा...आप

कौन हैं ?

दूसरा : मैं कौन हूँ ? (उदास आवाज में) इसी प्रश्न का उत्तर तो मैं भी ढूंढ रहा हूँ। इस छोटी-सी दुनिया में इसका उत्तर नही है। और भी दूर जाना होगा। चांद-सूरज की सीमाओं से परे, और ..और भी दूर... वह उत्तर क्या मुझे मिलेगा ? मैं कौन हूँ, यह जानने की कोशिश मत करो। बस, तुम मेरी बाँहों में आ जाओ...ये खाली हृदय...मेरा. ..भर जाये। मुझे और कुछ नहीं चाहिए। (दोनों को बाँहों में भर-सा लेता है।) तुम्ही मेरे सब कुछ हो...मुझ जैसे संतानहीन के लिए यही स्वर्ग-सुख है। (लड़की सीने में मुंह छुपा के आँखें पोंछती है।) बिटिया ! तुम्हारा अंग कितना कोमल है ! उन लोगों ने किसी तरह का दुख तो नही दिया ?

पहला : उन्होंने हमें तरह-तरह से सताया है। आप सुनेंगे तो सह नहीं पायेंगे।

दूसरा : (पहले को छोड़ कर लड़की को और क़रीब खींचते हुए) छोड़ो, मुझे मत सुनाओ। कितना कोमल है तुम्हारा शरीर ! चँवर डुलाने से भी जिस शरीर को चोट लगे, उसे दुख पहुँचाना ! मैं नही सुनूँगा। आओ, बिटिया, आओ मेरे साथ।

दूसरा लड़की को लेकर आगे बढ़ता है। पहला पीछे रह जाता है। थोड़ी देर टकटकी लगाये देखता रहता है। लड़की अचानक पीछे मुड़ कर देखती है।

लड़की : अरे ! खड़े क्यों रह गये ? आओ न।

दूसरा : (पीछे मुड़ कर देखते हुए) क्यों रे, रूठ गया है ? तुझे नही बुलाया इसी से ? नटखट कही का ! देखो, कैसे मुंह फुलाये खड़ा है। आ, जल्दी आ।

पहला : कहाँ जाना है ?

दूसरा : बातें सुनो इसकी ! कहाँ जाना है ! तब फिर जेलखाने में ही सड़ते रहो। अभी तक बाहर निकलने के लिए तड़प रहा था। निकल कर जाता कहाँ ?

पहला : पता नही।

दूसरा : पता नही ? सुनो, बिटिया ! बगुला भगत की बातें सुनो ज़रा। (दूसरे की भाषा पर दोनों चौंकते हैं।) तब तो तेरे लिए जेलखाना ही ठीक था।

लड़की : आपने हमारा उद्धार किया है। आप जो ठीक समझेंगे हम वही करेंगे। जेलखाने के कष्टों से यह जाने कैसा हो गया है।

दूसरा : चल फिर।

पहला : मैं नहीं जाऊँगा।

दूसरा : देखा ? भगत जी अड़ियल भी हैं।

लड़की : अरे, तुम्हें हो क्या गया है ? हमें जाना नहीं है ?

पहला : यही सोच रहा हूँ...कहाँ जायें ? सीखचों के बाहर निकल कर लग रहा है जैसे एक और भी बड़े जेलखाने में बंद हो रहे हैं। ज़रा सोचो, कितनी इच्छाएँ हैं हमारी। लेकिन जिधर भी क़दम बढ़ाते है, लगता है जैसे कोई रास्ता रोके खड़ा है—सारे रास्ते बंद हो जाने का नाम ही तो जेलखाना है। जानती हो ? दरअसल हम अभी कैद से नहीं छूटे है।

लड़की : ये सब बाद की बातें हैं, फ़िलहाल यहाँ से तो निकलें।

दूसरा : कुछ निश्चय किया, बिटिया ? इस गँवार को समझा सकी ? बंदर कहीं का ! चलो।

लड़की : चलिये। यह चलेगा। मेरी बात मानो। चलो।

तीसरा संतरी के वेश में प्रवेश करता है। दूसरे को एक कागज़ पकड़ाता है और फिर चला जाता है। दूसरा जेब से चश्मा निकाल कर पढ़ता है।

दूसरा : ठीक से दीखता भी नहीं है।

लड़की : मैं पढ़ दूँ ?

दूसरा : कैशमीमो क्या पढ़ोगी, बिटिया ?

पहला : आपने कुछ ख़रीदा है ?

दूसरा : कुछ ख़रीदे बिना कैशमीमो कहाँ से मिलेगा, भाई ? इतनी उम्र हो गयी, पर अपने-आप ख़रीदफ़रोख़्त का शौक मुझे अब भी बहुत है। इस बुढ्ढे का शौक देख कर तुम जरूर मन ही मन हँस रही होगी। मेरे साथ शापिंग करने चलो। फिर देखना कितना मॉडर्न है मेरा टेस्ट। यह ब्लाउज़ पहना है तुमने तो। गला बिलकुल बंद है—अरे, ज़रा बदन पर हवा-रोशनी तो लगे। अप-टू-डेट बनो। मेरा तो सोचने का तरीका ही अलग है।

लड़की : हाँ, आपका पहनावा देख कर ही इसका पता लग जाता है।

दूसरा : लग जाता है ? एँ ? (हँसते हुए) पहनावे के अंदर जो जवानी छुपी हुई है, उसका भी पता लगता है क्या ? बोलो !

लड़की : मन आपका बड़ा फ़ैश है।

दूसरा : (ज़ोर से हँस कर) अरे, देखो-देखो, इस बुद्धू ने फिर मुँह बना लिया। अब मैं डाटूँगा। कहे देता हूँ।

पहला : डाँटेंगे ? डाँटिये। वह भी बाक़ी क्यों रहे ?

दूसरा : क्यों रे, बूढ़े बाप को ज़रा-सा डाँटने का भी हक नहीं ?

पहला . आपको बाप मानने की बिलकुल इच्छा नही हो रही है।

लड़की : मैंने तुम्हें बोलने को मना किया है न ?

दूसरा · (करुण स्वर में) संतानहीन बूढ़े ने तुम लोगों को प्यार से अपने खाली हृदय से लगा लिया है। तुम लोगों को अपने बच्चों की तरह न मानूं तो मैं ही झूठा पड़ जाऊँगा। तुम इतने पत्थर-दिल कैसे बन सकते हो ? छि. ! और देखो, तुम लोगों की वजह से मेरा कितना खर्च हो गया !

पहला : खर्च, कैसा ?

दूसरा : ये कैशमीमो पढ़ कर देख...फिर समझेगा कैसा और कितना।

लड़की : किस चीज़ का कैशमीमो है ?

दूसरा : तुम लोगों को ख़रीदा है, उसी का कैशमीमो है।

पहला : हम लोगों को खरीदा है ?

दूसरा : कैशमीमो पढ़ कर देखो न, बच्चे ! कैश ट्रांजैक्शन। नक़द रुपये देकर ख़रीदा है.. कैशमीमो ले लिया है। नक़द लेन-देन किया है, हाँ।

लड़की : हमें ख़रीदा है और हमी को नहीं पता।

दूसरा : अब तो पता लग गया ?

पहला : किससे खरीदा ?

दूसरा हँसता है। पहला नाराज़ होता है।

पहला : किससे ख़रीदा ? (डाँट कर) किससे ख़रीदा ?

दूसरा : (तीखी, डाँटती हुई आवाज़ में) चुप्प ! उद्दंड लड़के, चुप ! फिर बोला तो 'नील डाउन' कराऊँगा।

पहला चुप हो जाता है।

दूसरा : किससे ख़रीदा है ! तुमको ख़रीदा और तुम ही को नही पता ? बनना बहुत आता है। बगुलाभगत ! उस पर मुँहज़ोरी। वज्जात, उल्लू कहीं का !

पहला : आपको खबरदार किये दे रहा हूँ। इस तरह की नीच भाषा का इस्तेमाल न कीजिये।

दूसरा : सुनो, सुनो, बिटिया ! यह बित्ते-भर का लड़का मुझे खबरदार कर रहा है !

लड़की : वह ठीक ही कह रहा है। आप बुज़ुर्ग हैं। लेकिन कभी-कभी ऐसी बे-सिर-पैर की बातें करते हैं।

दूसरा : लगता है, दोनों फन उठा रहे हो। न, न, ऐसा न करना। ज़हर के दाँत तोड़ने का पत्थर मेरे पास है। छि:-छि: ! ऐसा न करना। नक़द

पैसे दिये, मगर यह कैसा माल मुझे दे दिया ! देखने मे दो मन दूध, पर मक्खन कितना निकलेगा, कौन जाने ? पर मक्खन निकालने का तरीका मुझे आता है, जी ! खैर, अब चला जाये।

पहला : आपकी जहाँ मर्जी हो जाइये। हम नही जायेंगे।

दूसरा : तुम, रानी बिटिया ?

लड़की : अगर यह न जाये तो मैं अकेले कहाँ जाऊँगी ?

दूसरा : अकेले कहाँ ? मैं क्या इंसान नही हूँ ? मैं क्या इतना बूढा हो गया हूँ, जी ? इसके अलावा, अगर मैं तुम्हें पसंद नही, तो बहुत-से जवान लडकों से तुम्हे मिला दूंगा। सबको इकट्ठा कर रखा है। ये अंग-अंग से छलकती जवानी ! इसकी एक-एक लहर दसियों सीनों पे पछाड़ खा कर गिरे, तब न ! यौवन नटखट न हो तो मजा ही क्या ? आओ, देखो न, मिनटों मे पंख फैलाये नाचती सुनहरी चिड़िया बना दूंगा।

लडकी : आप चुप हो जाइये।

पहला : आप अभी चले जाइये। नही तो...।

दूसरा : नही तो ?

पहला : मेरे पास एक छुरा रहता है। बताये देता हूँ।

दूसरा : वह क्या मुझे नही मालूम ? इसीलिए तो तुम्हे खरीदा है। आजकल के लड़के छुरा हाथ में लिये बड़े तड़पते हैं। जरा-सा इलाज हो जाये तो सब ठीक हो जायेंगे। तुम्हारा इलाज करवाने के लिए ही तो तुम्हें खरीदा है, जी।

पहला : आपसे आखिरी बार कह रहा हूँ—चले जाइये !

दूसरा : एक बार आ जाने के बाद तो जाता नही हूँ, भाई !

लडकी : फिर हम चले जायेंगे।

पहला : हाँ, चलो।

दूसरा : चले जाओगे ? रास्ता कहाँ है ? ये सब रास्ते तो मेरे हैं—सब खरीद लिये है मैंने। जब कोई इन रास्तो पर चलता है, तो उसके क़दमो की आहट को टेप-रिकार्ड कर लेते है। कैसी आवाज है ? उसका मतलब क्या है ? कदमो की आवाज़ कहाँ जाती है ? किससे मिलना चाहती है ? किन लोगो के साथ ताल मिला कर चलती है ? सब नोट करके रख लिया जाता है। हमारा यह कारखाना बहुत पुराना है, और तुम अभी कल के छोकरे हो।

पहला : आपके खरीदे हुए रास्तों के अलावा भी और रास्ते हैं। उन्ही रास्तों पर चलेंगे। आपकी आँखों के सामने से ही जायेंगे।

दूसरा : ठीक है। आगे चलो। जो रास्ता मैंने नही खरीदा है, वहाँ मेरा संतरी

है। वह चिल्ला कर पूछेगा—कौन जाता है।

पहला : कहूँगा—मैं, हम लोग।

दूसरा : हम लोग ? हम लोग माने कितने लोग ?

लड़की : दो लोग—हम दोनों।

दूसरा : दोनों ! (हँसता है।) ठीक है, आगे बढ़ो। उस रास्ते पर हज़ारों आदमी मुंह के बल गिरे हैं, और तुम दोनों ! बढ़ो...आगे बढो... देखूं रा...खेल तो देखूं। क्या हुआ ? बढ़ो ?

पहला : ज़रूर आगे बढ़ेंगे। चलो।

पहला लड़की का हाथ पकड़ता है। दूसरा ताली बजाता है। दो बार। तीसरा बंदूक संभाले प्रवेश करता ही चिल्लाता है—कौन जाता है ! वे दोनों ठिठक कर खड़े हो जाते है।

दूसरा : (तीसरे से) जाओ, डाक्टर को भेज दो। इन दो रोगियों को देखेगा। जाओ।

तीसरा चला जाता है।

दूसरा : बैठो, जी। तुम लोग बैठो। बात समझ में आ गयी ? प्राणों का मोह छोड़ना बहुत मुश्किल है, भाई ! सबसे पहली बात है ज़िंदा रहना। और मैं तो तुम्हें मारना नही चाहता। अच्छी तरह ज़िंदा रहने का बन्दोबस्त कर दूंगा। पैसे खर्च के खरीदा है—रुपये-पैसे देकर सुख से भरा-पूरा घर बनवा दूंगा। उसके बदले में तुम मेरा थोड़ा-सा भी काम नही करोगे ? ऐसे नाशुक्रे होने से काम नही चलेगा, भाई !

पहला : इस तरह कब तक जीतेंगे आप ?

दूसरा : हमेशा जीतना ही तो आ रहा हूँ, भाई !

पहला : सच कह रहे हैं ?

दूसरा : झूठ भी नही है। रानी बिटिया, तुम इतनी उदास होकर क्यों बैठी हो ? यह तो फिर भी कुछ चीं-चपड़ कर रहा है।

लड़की : (अचानक चेहरा उठा कर) अपना छुरा मुझे दोगे ?

पहला : क्यों ? तुम क्या करोगी ?

लड़की : कम से कम हम दोनों अपने सीने में यह छुरा तो भोंक ही सकते है।

दूसरा : यह ज़रा नाटकीय नही हो जायेगा ? इतनी जल्दी भी क्या है ? नाटक के आखिरी दृश्य के लिए बचा कर रखो—नही तो दर्शक लोग ऊंघने लगेंगे न।

पहला : आप हमें ले जाकर क्या करना चाहते हैं ? लगातार हँसी-मज़ाक या और कुछ ?

दूसरा : अभी तो इलाज होगा।

लड़की : उसके बाद ?

दूसरा : उसके बाद अपने काम में लगाऊँगा।

पहला : किस काम में ?

लड़की : सोना चुगने का काम ?

दूसरा : हाँ, चारों तरफ सोना बिखरा हुआ है, बटोर कर लाना है। उसके लिए लोग तो चाहिए न।

पहला : इसका मतलब ? हम आपके सोने की खानों के मजदूर बनेंगे ?

दूसरा : सिर्फ मजदूरों से कैसे काम चलेगा ? सोने का पहरा देने के लिए पहरेदार नहीं चाहिए ?

लड़की : तब ? तब क्या पहरेदारी का काम है ?

दूसरा : पहरेदार तो चाहिए ही—उसके साथ पूरी योजना चलाने के लिए भी तो आदमियों की जरूरत है ?

पहला : फिर ?

दूसरा : फिर और देशों में ऐसी जो संस्थाएँ हैं, उनके साथ संबंध रखना—दो-एक जनों का काम है क्या ? यह तो, भाई, बड़ी भारी योजना है। दुनिया-भर में फैली है हमारी मित्रता। यह तो भाईचारे का सम्बन्ध है, दोस्ती का। बहुत अच्छा...! मेरे बदन पर सुई चुभे तो उसके बदन से खून टपकेगा। सात समुंदर पार उसके सिर पर लाठी मारो तो मैं अपनी खोपड़ी की मरहम-पट्टी करवाऊँगा। यह दोस्ती बहुत-बहुत ही अच्छी है, भाई ..सीखने लायक है। तुम दोनों सिर्फ एक-दूसरे से चिपटे हुए हो। इस बंधन की महिमा तुम क्या समझोगे ?

तीसरा प्रवेश करता है।

तीसरा : अरे वाह, गुरु जी ! छात्र-छात्रा को लेकर बिलकुल आश्रम खोले बैठे हो। गुरु, ये तो बताओ सबसे अच्छा आश्रम कौन-सा है ?

दूसरा : किसी जमान छोकरी के गालों के गड्ढे। हैं न यार ?

तीसरा : अरे वाह ! क्या कहा है ! तभी तो तुम्हें गुरु कहता हूँ। चरणों की धूल दो, गुरु ! चरणों की धूल !

दूसरा : मिलेगी, मिलेगी, धूल भी मिलेगी। पर पहले इलाज तो शुरू करो।

तीसरा : कैसी बीमारी है ?

दूसरा : पुरानी।

दोनों को बीच में [illegible] ों और
जल्दी-जल्दी नोचे [illegible] जायेंगे।
लड़के-लड़की के [illegible] र्त

पड़ेगी।

तीसरा : क्या बीमारी है ?

दूसरा : पारी का बुखार।

तीसरा : बीच-बीच मे गर्म हो उठते हैं ?

दूसरा : गलत-सलत बकते हैं।

तीसरा : दाँत पीसते हैं ?

दूसरा : हाथ-पैर पटकते है।

तीसरा : पसीना आता है ?

दूसरा : जोर-जोर से साँस लेते है।

तीसरा : सिर मारते है ?

दूसरा : सजे-सजाये घर मे सिर मारते हैं।

तीसरा : सीग हैं ?

दूसरा : अभी निकले नहीं।

तीसरा : कितना ऊँचा कूद सकते है ?

दूसरा : गुस्से से रोने तक।

तीसरा : आँखें लाल होती है ?

दूसरा : लाल होती हैं।

तीसरा : नाखून है ?

दूसरा : दाँतों से कुतर डालते हैं।

तीसरा : गुट बनाते है ?

दूसरा : लड़की बाल बनाती है।

तीसरा : लड़का गुट बनाता है ?

दूसरा : हिचकिचाता है।

तीसरा : भूखा है ?

दूसरा : उल्टी-सीधी भूख है।

तीसरा : चिल्लाता है ?

दूसरा : चिल्लाता है।

तीसरा : क्या चाहता है ?

दूसरा : खून करना चाहता है।

तीसरा : खून करना चाहता है ?

दूसरा : छुरा है !

तीसरा : (पहले से) छुरा दो ! ए जी, वह वाला छुरा दे दो !

गोल-गोल चलना बंद कर देते हैं।

पहला : साथ नही लाया हूँ।

दूसरा : निकालो, मैं कहता हूँ।

पहला : नहीं है। मैंने निगल लिया है।

तीसरा : निगल लिया है ? देखूं, मुंह खोलो !

पहला मुंह खोल देता है। तीसरा टार्च से अंदर देखता है।

तीसरा : हूँ, नोक तो दीख रही है। ठीक है। कोई घबराने की बात नहीं है। वह डिजाल्व हो जायेगा। ऐसिड डाल कर पिघला दिया जायेगा। (लड़की से) तुम्हारे पास छुरा है ?

लड़की : हाँ, है।

तीसरा : निकालो, निकालो ! टप्प से निगल तो नहीं लिया ?

लड़की : नहीं।

दूसरा : तो फिर निकाल दो, बिटिया !

लड़की : अभी नहीं है। पसंद करके दुकान पर ही छोड़ आयी हूँ। कभी खरीदूंगी।

दूसरा : खरीद चुकी ! सीधी मेरे क्लीनिक में जाओगी, वहाँ इलाज होगा—बस सब झंझट खत्म। शांत मीठी अल्हड़ लड़की बन जाओगी। कितने खिलौने हैं मेरे—उनसे खेलोगी।

पहला : बड़ा अच्छा खेल है ! और खिलौने हमें नहीं चाहिए। जाने कब ये खेल खत्म होगा।

दूसरा : खत्म होगा, जरूर खत्म होगा—डाक्टर आया है। दिमाग ठीक होने पर ही सब कुछ फिर से अच्छा लगेगा। है न, डाक्टर ?

तीसरा : दिमाग की सफाई की जरूरत है। बहुत कूड़ा-करकट इकट्ठा हो रहा है। दिमाग को धो-पोंछ कर उसमें नये बीज बोने पड़ेंगे। बस फिर शांति। देखना, जलन नहीं, दर्द नहीं। असल में क्या चाहते हो, बताओ। मन की शांति ही न ? ला दूंगा। कुछ टोना करूँगा दोनों पर, जिससे धीरे-धीरे असंतोष के बादल छँट जायेंगे। बड़ा आराम महसूस होगा। और क्या चाहिए ?

दूसरा : जरा भी तकलीफ नहीं होगी। यह तो बिजली का शॉक नहीं है न। नसों में जो गर्मी है, उसे धीरे-धीरे आइसक्रीम की तरह मीठा और ठंडा कर दिया जायेगा। इतनी लड़ाई क्यों चल रही है ? इसी आराम के लिए न। वह मिलेगा। हाथ-पैर पटकने से क्या फायदा ? मैं हाथ बढ़ा कर दे रहा हूँ, कोई लड़ कर लेना चाहते हैं, किसी को छप्पर फाड़ कर मिलता है। यह सीधा-सादा हिसाब तुम्हारी समझ में क्यों नहीं आता, जी ?

तीसरा : दरअसल थोड़े-से नाराज हो, यही न ? टैबलेट दूंगा, सब ठीक हो

'अभियान' द्वारा प्रदर्शित 'गिनीपिग' में



अनिल सहगल, कीमती आनन्द और चेतना तिवारी।



कुलभूषण खरबंदा और चेतना तिवारी।

'अभियान' द्वारा मंचित 'गिनीपिग' में
अनिल सहगल और चेतना तिवारी





'दूसरे' के रूप में कुलभूषण खरबंदा

जायेगा। नर्वस टेंशन है, समझे न ?

दूसरा : असल में थोड़ी लड़ने की इच्छा होती है। है न ? बाक्सिंग ? बाक्सिंग करना चाहते हो ? (बाक्सिंग की मुद्रा में कूदते हुए) हाँ, हाँ लड़ोगे, लड़ते रहोगे हमेशा। अच्छे दस्ताने खरीद दूँगा। रिंग के बाहर से ताली सुनना चाहते हो न ? ताली बजाने वाले मेरे पास बहुत-से लोग हैं। रेडियो, टेलीविज़न, अखबार, सिनेमा, थिएटर, भाषण, पोस्टर... सब एक साथ ताली बजायेंगे। और क्या चाहते हो ? मेरे पास सब है। बस सिर्फ दिमाग़ को ज़रा ठंडा करो...और काम में मन लगाओ। चारों तरफ सब सँभाला-सँजोया हुआ है—उसे उलट-पुलट मत करो। किसी भी चीज को तहस-नहस नहीं करना चाहिए—समझे न ? जैसा है वैसा ही रखो। अच्छा ?

पहला : यह बार-बार अच्छा-अच्छा कह कर हमारी राय जानने की बनावटी नम्रता अब छोड़िये। हमारी राय का मूल्य ही क्या है आपके पास ?

दूसरा : ठीक है। तुम्हारी आखिरी इच्छा क्या है ? बताओ जरूर पूरी करूँगा।

पहला : ओ ! फाँसी पर लटकाने से ठीक एक मिनट पहले का डायलाग। नहीं, वैसा डर अब और नहीं लगता।

दूसरा : अरे-रे-रे ! ऐसी अशुभ बातें नहीं करते। (पहले की ठोड़ी छूने लगता है, वह झटके से उसका हाथ हटा देता है।) जियो, जुग-जुग जियो !

लड़की : मेरी एक इच्छा पूरी करें ?

दूसरा : बोलो, बिटिया रानी, बोलो ! इस बुद्धू की तरह तुम ज्यादा चीं-चपड़ नहीं करती—मुझे बहुत अच्छा लगता है। इसके साथ तुम्हारा मेल कैसे हुआ ? बोलो, क्या इच्छा है, बोलो !

पहला : तुम कुछ नहीं माँगोगी उससे।

दूसरा : चुप, बुद्धू !

लड़की : (लाड़भरे स्वर में) ज़रा अपना ऐलबम मुझे देखने देंगे ?

दूसरा : ऐलबम ? मेरा ? क्या करोगी ?

लड़की : क्लीनिक में काम तो कुछ होगा नहीं, बस बैठी-बैठी देखती रहूँगी।

दूसरा : तसवीरें देखोगी ?

लड़की : (मज़ाक करती हुई-सी) हाँ, तसवीरें ! आपके कितने चेहरे है, कितने चेहरे हैं, कितने वेश ! पन्ने पलट-पलट कर देखूँगी।

दूसरा : अरे, बाबा ! लड़की मेरी टेढ़ी-मेढ़ी बातें कर रही है।

लड़की : सो तो कभी-कभी करती हूँ, राजा साहब !

दूसरा : (सहसा ऊँची आवाज में) डाक्टर ! स्टार्ट योर ट्रीटमेंट ! स्टार्ट।

एक तीखी यांत्रिक आवाज होती है और उसके साथ ही

बत्तियाँ बुझ जाती हैं। कुछ पलों के बाद ही मंच में विचित्र रंग की रोशनियाँ घूमने लगती हैं। साथ ही एक कर्कश सी आवाज लगातार होती रहती है। पहला और लड़की दोनों तरफ दो कुर्सियों पर बेहोश-से बैठे हैं। यह सब धुंधली-धुंधली, रंग-बिरंगी रोशनी में दीखता रहता है। लड़की के पास तीसरा खड़ा है। आवाज रुक जाती है और स्वाभाविक रोशनी से मंच आलोकित होता है।

तीसरा : गुरु, इलाज हो गया। इन दोनों को अलग कर दिया है।

दूसरा : मगर दोनों को अलग करने से तो काम नहीं चलेगा। बाहर जो लोग दिन-रात चीखते-चिल्लाते रहते हैं, उनसे इनको अलग करना है।

तीसरा : धीरे-धीरे सब होगा। बाहर के लोगों को अब पसन्द ही नहीं करेंगे।

दूसरा : कब जागेंगे ?

तीसरा : जगे ही हुए हैं। सिर्फ आराम के कारण आँखें बन्द है। नसों का वह तनाव अब खत्म हो गया न।

दूसरा : तब इनको पूरा आराम करने का मौका दिया जाये।

तीसरा : हाँ दिया जाये।

दूसरा : तुम चलो। मैं इनके साथ दो-चार बातें करके आता हूँ।

तीसरा चला जाता है। दूसरा लड़के की तरफ झुक कर तरह-तरह से उसको देखता है, लड़की को भी देखता है।

दूसरा : ए, भगत जी अरे, ओ भगत जी ! जरा आँखें तो खोलो। रानी बिटिया, सुन रही हो ? (आगे बढ़ कर लड़की के माथे और चेहरे पर लोभी की तरह हाथ फेरते हुए) यौवन तो कानों से नहीं सुनता, मुनिया ! यौवन बहरा जो है—अंधा भी, स्पर्श से बोलता है और स्पर्श से ही सुनता है। क्या कह रहा हूँ, सुन रही हो ? (लड़की आँखें बंद किये ही कनमुनाती है और उसकी एक उँगली हल्के से काट लेती है।) तो मछली फँस गयी ? पानी से निकाल कर कहाँ रखूँ ? जमीन पर ? या पानी में ही खेल खिलाऊँ ?

लड़की अलसायी-सी आँखें खोलती है। चेहरे पर मस्त हँसी। दूसरे की हथेली पकड़ लेती है।

दूसरा : अरे, ओ—भगत ! देख, आँखें खोल कर देख, मेरा इलाज फलने लगा है।

पहला मुश्किल से आँखें खोलता है। उनको देख कर चुपचाप बतीसी निकाले हँसता है, और फिर देखता ही रहता है।

दूसरा : अरे, बुढ्ढू की तो लगता है जवान ही बंद हो गयी ! इसी को कहते हैं इलाज ! कैसा असर हो रहा है ! नुमाइश में भेजना चाहिए इन्हें। क्या मुस्कान है, वाह ! (चिल्ला कर) ए, बातें करनी है, जरा होश में तो आओ।

दोनों आँखें मलते हुए साफ़ देखने की कोशिश करते हैं।

लड़की : (धीमी आवाज) मैं कहाँ हूँ ?

दूसरा : मेरे बिलकुल पास।

लड़की : वह कहाँ है ?

दूसरा : वह रहा। जबान बंद हो गयी है। चाँद का टुकड़ा चाँदनी बिखेर रहा है।

लड़की : (लाड़ में आ कर) मुझे नींद आ रही है।

दूसरा : आयेगी नहीं ? नसों का तनाव खत्म हो गया न। अब तो लंबी नींद में ही डूबोगी-उतराओगी। एक शांत, ठंडी-सी नींद से घिरी हुई चलोगी, फिरोगी। घर के काम-काज करोगी। अपनी आँखों से यह सब देखे जा रहा हूँ—बड़ा चैन मिल रहा है मुझको।

लड़की : (रूठ कर) आप कहाँ जायेंगे ?

दूसरा : बस, मेरा काम तो खत्म हुआ...अब कोई और आयेंगे। उन्हीं के पास रहोगे तुम लोग। उन्हीं का काम-काज करोगे।

लड़की : क्या काम ?

दूसरा : अच्छा काम है। तुम लोगों का प्रोमोशन जो हो गया है। इलाज का असर अच्छा होने पर ही प्रोमोशन मिलता है। वे आयेंगे...आकर इंटरव्यू लेंगे। तुम जरूर पास हो जाओगे।

लड़की : आप मत जाइये। मेरे पास रहिये।

दूसरा : उनका रहना मेरा ही रहना है। घबराने की कोई बात नहीं।

पहला : (लाड़ से) नहीं, आप मत जाइये।

दूसरा : देखा, कैसे हिल गये हैं मुझसे ! अरे, मेरे न रहने से क्या बिलकुल अनाथ हो जाओगे ? मेरा सर्टिफिकेट है, इसका मतलब ही है मैं हूँ तुम लोगों के पास।

लड़की : जाने कैसा खाली-खाली लगेगा।

पहला : सिर पर आपकी छत्रछाया थी—अब यह बरगद की छाया जैसे हट गयी।

दूसरा : जाते वक़्त ऐसे नहीं करते। मोह नहीं बढ़ाओ, भई, नहीं तो मैं रो दूँगा। उससे क्या फायदा ? तुम्हीं तो मेरे सब-कुछ हो। तुम्हें मैं आशीर्वाद देता हूँ।

लड़की : हम आप को कुछ भी नहीं दे सकते।

दूसरा : (फुसफुसा कर) ठीक है। एक मन-माफिक भेंट देना मुझको। (अर्थपूर्ण ढंग से मुस्कराते हुए) सुगंध से भरा अंग...दो फूल ही दे जाना बूढ़ा हो गया, पर मन फिर भी कहता है...सुगंध लेने से बढ़ कर कोई सुख नहीं है, भाई।

पहला : (मजाक करता हुआ-सा) क्या बातें हो रही हैं ? सब सुनायी दे रहा है मुझको।

लड़की : (बनावटी गुस्से से) हमारी बातें क्यों सुन रहे हो ? सब बातें कान लगा कर सुनने की आदत पड़ गयी है।

दूसरा : नहीं, जी नहीं, उसने कुछ नहीं सुना। यूँ ही तुम्हें डरा रहा है।

लड़की : ऊँह, सुनने भी दो। कौन डरता है ? यह क्या कोई कम है ! सब बता दूँगी, हाँ।

पहला : बस, डराना-धमकाना शुरू हो गया ? मैंने ऐसा क्या कहा है ?

दूसरा : देखो, फिर झगड़ने लगे तुम लोग। चुप हो जाओ। कोई किसी की पोल नहीं खोलेगा। और न ही कोई किसी पर रोक-टोक लगायेगा। यौवन तो सागर है रे, चाहे जितनी लहरें चुरा लो, कौन देखता है ? न झगड़ा न फसाद। अच्छा फिर आऊँगा। अब तुम्हारे नये बॉस आयेंगे। ठीक से इंटरव्यू देना तुम लोग। चलूँ, तो फिर। जाओ, रानी बिटिया, मैं आँगन धो-पोंछ कर रखूँगा। बस आकर दो फूल बिखेर जाना।

> दोनों की ठोढ़ी अपनी उँगलियों से छू कर उन्हें चूमता है और चला जाता है। वे दोनों हाथ हिला कर उसे विदा करते हैं। लड़की अब खिलखिला कर हँस पड़ती है।

पहला : इतनी जोर से मत हँसो। बुड्ढा अभी तक दफा नहीं हुआ। सुन लेगा।

लड़की : (हँसी रोक कर) बुड्ढा कितना रसिया है, देखा ? बिलकुल रसीली रसभरी !

पहला : अरे पटा कर रखना है। यह भी तो एक आर्ट है। कैसा बस में किया है, देखा ? तुम्हें मुझसे कुछ सीखना चाहिए।

लड़की : तुमसे ? मुझे सिखाने की जरूरत नहीं तुम्हें।

पहला : (हँस कर) हाँ, यह कहो कि तुम ही मुझे सिखा सकती हो। है न ?

लड़की : ए, बुड्ढे ने कहा था न, कोई आयेगा।

पहला : आने दो।

लड़की : बुड्ढे का भी बॉस। कमरा जरा ठीक-ठाक नहीं करोगे ?

पहला : अरे, सब गड़बड़ कर दिया था अभी। कमरा जैसा है वैसा ही रखने से तो सर्टिफिकेट मिलेगा। कैसी भुलक्कड़ होती जा रही हो! सारे नंबर कट जाते। इंटरव्यू में बिलकुल फ़ेल। कुछ नहीं हटाना है। इन लोगों के क़ायदे-क़ानून सब भूल गयी क्या?

लड़की : अरे रे रे! शुक्र है, याद दिला दिया। (कुछ सोचते हुए) फूलदान को पहली वाली जगह पर रख दूँ। पता नहीं कब तुमने हटा कर रख दिया। खुद ही तो ग़लती करते हो और हर समय मेरी बातों में मीन-मेख निकालते हो।

पहला : घड़ी? देखो! कहाँ उठा कर रखी है? (ठीक जगह रखता है।) अब ठीक है।

लड़की : कैलेंडर ठीक है?

पहला : (देख कर) ठीक है।

लड़की : (अपनी तरफ़ देखती हुई) मैं? मैं ठीक हूँ न?

पहला : (लाड़ भरी आवाज़ में) तुम? तुम बहुत ठीक हो। लेकिन तुम्हें देख कर मेरा दिमाग़ ठिकाने नहीं रहता। (उसे पकड़ने के लिए आगे बढ़ता है। लड़की हँस कर भागने लगती है। इतने में दरवाज़े की कुंडी खड़कती है। वे ठिठक कर रुक जाते हैं।) आ गये शायद। खोलता हूँ।

लड़की : ठहरो। (एक अदृश्य शीशे में अपना चेहरा देख कर अपने को सँवारते हुए) आई-ब्रो पेंसिल कहाँ चली गयी, बताना?

पहला : उसकी कोई ज़रूरत नहीं। (कुंडी फिर खटकती है।)

लड़की : ज़रूरत नहीं? क्या मतलब?

पहला : अरे, मेरी टाई?

लड़की : कौन-सी चीज़ कहाँ रखते हैं, पता ही नहीं चलता। अब ढूँढने का समय ही कहाँ है? पाउडर भी नहीं मिल रहा।

पहला : चश्मा? चश्मा जाने कहाँ रख दिया?

ज़ोर से कुंडी खटकती है।

लड़की : कोई भी चीज़ अगर ठीक जगह रहती हो! मेरी लिपस्टिक?

पहला : बाद में ढूँढना। खोल रहा हूँ। इतनी देर इंतज़ार कराना कितनी बदतमीज़ी है!

लड़की : ज़रूर कोई कमरे में घुसा था। इस तरह सोते हो तुम। ज़रूर किसी ने चुरा ली है मेरी चीज़ें। पता नहीं क्या-क्या चीज़ें उठा ले गया है। ज़रा दराज़ खोल कर देखो न...क्या पता, मेरी घड़ी भी चुरा ली हो।

पहला : न, नहीं है। वह तो तुमने हाथ में बाँध रखी है।

लड़की : यह नहीं। कल तो खरीदी थी, वह वाली।

कुंडी खटकती है।

पहला : इतनी देर तक दरवाजा बंद रखना कहाँ की तमीज है ?

लड़की : मैंने मना किया है खोलने को ? हर वक़्त मुझे ही डाँटते रहोगे।

पहला : मारा गया ! मेरे जूते ! जूते की क़ीमत जानती हो कितनी है ?

लड़की : बिना जूते पहने क्या दरवाजा नहीं खोलोगे ? (**गले को हाथ से सहला कर**) अरे, मेरी जड़ाऊ नेकलेस ? (**कानों को छू कर**) मेरे टाप्स ? (**रुआँसी हो कर**) देखा ! हीरे के टाप्स कहाँ गये ?

पहला : तुम तो जैसे किसी पार्टी में जा रही हो ! इन सब चीजों से अब फ़ायदा ही क्या है ? अरे, मेरे हीरे के बटन ?

लड़की : अहा, तुम तो जैसे बाहर घूमने जा रहे हो ! घर ही में तो रहना है। (**बाहर देख कर**) हमारी कार ?

पहला : हमारा फ़ोन !

लड़की : और सोफा सेट ?

पहला : फर्श का लिनोलियम ?

लड़की : रेडियोग्राम ?

पहला : टेलीविजन सेट ?

लड़की : (**बुलाते हुए**) बॉय ! बैरा !

पहला : (**जोर से**) बॉय ! बैरा !

लड़की : (**हताश हो कर**) कहाँ चले गये सब ?

पहला : (**हताश हो कर**) कोई नहीं बोलता। किसी की आवाज नहीं आ रही।

लड़की : कितना खाली-खाली महसूस होता है। मुझे डर लग रहा है।

पहला : ये कैसा खालीपन है ?

लड़की : मुझे डर लग रहा है, जी।

पहला : हमारे अंदर भी ऐसा ही खालीपन है। जैसे—जैसे कोई सब कुछ उठा कर ले गया हो।

कुंडी खटकती है।

लड़की : दरवाजा नहीं खोलोगे ?

पहला : देखो, बिलकुल भूल गया।

लड़की : आजकल तुम बहुत भूलने लगे हो... कितनी बार कहा है, किसी अच्छे-से डॉक्टर को दिखाओ।

पहला : बस, मुझे ही डाँटती रहो। तुम भी तो डॉक्टर के पास नहीं जा रही हो ...सारी रात सोती नहीं हो। जरा डॉक्टर के पास चली ही जाओ तो क्या बिगड़ जायगा ?

लड़की : क्या होगा ?

पहला : ठीक कहा तुमने, क्या होगा ? शायद लोग अपने लिए ही जीना नहीं चाहते...ऊब जाते हैं। सब कुछ जैसे एकदम रट जाता है। हम लोगों का और कोई नहीं हैं, है न ?

कुंडी खटकती रहती है।

लड़की : अरे ! देखा, अंदर की कुंडी खटक रही है। हम अब तक सोच रहे थे, बाहर की कुंडी है। मामला क्या है ?

पहला : अरे, हाँ। अंदर के कमरे में कौन घुस बैठा है ?

लड़की : चोर-डकैत के सिवा और कौन हो सकता है ? हाय राम...अब ? अब क्या करोगे ?

पहला : इसका मतलब सुबह से घुसा बैठा है, समझी। क्योंकि हम अभी तो लौटे हैं।

लड़की : सुबह हम लोगों के घर से निकलने के पहले कोई आया था न ?

पहला : कौन आया था, याद है ?

लड़की : तुम्हीं तो बातचीत कर रहे थे, मैं तो तब सो रही थी।

पहला : लो, तुम्हीं ने तो मुझे जगाया और जाने किसका नाम लेकर कहने लगी कि फ़लाँ तुम्हें बुला रहा है। पता नहीं क्या नाम था...याद नहीं आ रहा।

लड़की : मैंने नाम लिया था ? कैसी उल्टी-सीधी बातें कर रहे हो ? सच बताओ, कहा था मैंने ?

पहला : तुम्हें याद नहीं आ रहा ?

लड़की : नहीं तो। उस आदमी के साथ तो तुम्हीं बात करते रहे थे, तुम्हें नाम नहीं याद आ रहा ? बिल्कुल नहीं ?

पहला : नहीं।

लड़की : तुम ज़ोर-ज़ोर से बातें कर रहे थे। मुझे याद है...उस कमरे का दरवाज़ा खोलने की आवाज़ आयी थी। अब याद आ रहा है।

पहला : (अचानक जैसे कुछ याद-सा आ जाता है।) हाँ, मैंने शायद। किसी का हाथ मज़बूती से पकड़ रखा था और उसका मुँह बाँधने की कोशिश कर रहा था। तुम्हें मैंने एक रस्सी लाने को कहा था...तुम्हें मिली नहीं रस्सी।

लड़की : मैं तो सो रही थी।

पहला : मैं भी तो ब्रश कर रहा था। दाँत साफ़ कर रहा था, शायद। फिर ?

लड़की : पर कोई आया ज़रूर था।

पहला : ज़रूर आया होगा, नहीं तो फिर उस कमरे में कौन है ? ठहरो, खोलता

हूँ। उसे देखने पर शायद याद आ जाये।

लड़की : नहीं, अकेले हो। मत खोलना। उसके पास हथियार होते हैं। खाली हाथ कोई नहीं आता।

पहला : (चिल्ला कर) अजी जनाब, कुंडी कौन खटखटा रहे हैं?

बाहर से आवाज़ : मैं!

पहला : मैं कौन?

आवाज : मैं हूँ जी, मैं।

पहला : एँ.. ऐसे बोल रहे हैं जैसे जनम-जनम के परिचित हो। नाम बताइये।

आवाज : कह तो रहा हूँ.. अरे, मैं हूँ?

लड़की : सुनो, 'मैं' नाम भी तो हो सकता है। (चिल्ला कर) क्या आपका नाम 'मैं' है।

आवाज़ : (नक़ल उतारते हुए) क्या आपका नाम मैं है? बात करने का ढंग देखो? मैं क्या किसी का नाम होता है? खोलिये न, अकेले-अकेले दम घुटा जा रहा है। तब से दोनों चहक रहे हैं, और मैं एक शब्द भी नहीं बोल पा रहा हूँ। खोलिये न।

पहला : आपके हाथों में कुछ है तो नहीं?

आवाज : है क्यों नहीं? दस उँगलियाँ हैं। दरवाज़ा खोलेंगे या तोड़ डालूँ? देखिये, मैं लात मार रहा हूँ। हाँ।

दरवाजे पर लात मारने की आवाज़।

लड़की : लात मार रहा है।

पहला : तो मैं क्या करूँ? वह लात मार रहा है, या मैं? इसमें भी मेरा ही कसूर है क्या!

लड़की : बहुत गुस्से में है।

पहला : तो गुस्सा दिलाती ही क्यों हो?

लड़की : मैंने गुस्सा दिलाया?

पहला : मैं तो दरवाज़ा खोल देना चाहता हूँ।

लड़की : तो खोल दो!

पहला : लो, खोल रहा हूँ।

पायजामे-कुरते में तीसरा प्रवेश करता है। रूमाल से माथे का पसीना पोंछता है। अपने पैर की उँगली की तरफ़ देखता है।

तीसरा : लात मारने से पैर के अँगूठे में इतनी चोट लग गयी। ऐसे हैं न आप लोग!

लड़की : हमने आपको लात मारने के लिए कहा था ? टाँगों का ज़ोर आज़माने से यही होता है।

पहला : क्यों जनाब, जान न पहचान, मेरे कमरे मे घुसे बैठे हैं ?

तीसरा : कौन किसके कमरे मे घुसा बैठा है यही तो प्रश्न है।

लड़की : कौन किसके कमरे में ! मतलब ? क्या यह आपका कमरा है ?

तीसरा : इसमे क्या शक है ?

पहला : आपका दिमाग तो ठिकाने है ?

तीसरा : मेरा भी यही सवाल है। आप लोगों का दिमाग ठीक है ?

पहला : बनना छोड़िये। इस कमरे मे आप घुसे कैसे ?

तीसरा : अपने कमरे में घुसा हूँ...तो क्यों घुसा हूँ, कैसे घुसा हूँ, इसका भी लंबा-चौड़ा बयान देना पड़ेगा क्या ?

लड़की : किस मतलब से घुसे हैं, बताइये ?

तीसरा : किस मतलब से आपने मुझे कुंडी लगा कर कमरे में बद करके रखा था. पहले यह तो बताइये ?

लड़की : क्या कह रहे हैं ?

तीसरा : बिलकुल ठीक कह रहा हूँ ..सुबह धकेलते-धकेलते उस कमरे में मुझे बद नही कर दिया था आपने ? कैसी पुअर मेमरी है, रे बाबा !

पहला : सुबह-सुबह लगता है शायद कुछ हुआ था।

तीसरा : हाँ, कोई भूचाल-वूचाल नही आया था...मैं जो कह रहा हूँ वही हुआ था।

लड़की : हमारी सब चीजें कहाँ गयीं, बताइये ?

तीसरा : मेरी चीजें कहाँ गयी, पहले यह बताइये.. मैं क्या खाली कमरे में लेटे-लेटे सुख के सपने देखता था ? माल-असबाब से कमरा भरा हुआ था.. क्या किया है आप लोगों ने उस सबका ?

पहला : इस कमरे मे आपकी चीजें थी ?

तीसरा : सोफासेट, लिनोलियम, टेलीविजन...सब कुछ। यहाँ तक कि आपकी श्रीमतीजी की ही तरह लड़की भी थी।

पहला : वह कहाँ है ? उस कमरे में सो रही है क्या ? कहाँ है वह ?

तीसरा : (लड़की की ओर इशारा करके) यह जहाँ जायेंगी, वहाँ पहले से ही जा बैठी है।

लड़की : कहाँ ?

तीसरा : स्वर्गधाम ! और कहाँ ? जहाँ मैं भी जाऊँगा। (पहले की ओर इशारा करके) आप भी जायेंगे...आज या कल।

लड़की : (हमदर्दी के साथ) आपकी पत्नी की मृत्यु हो गयी है ?

लड़की : जाने कौन हम लोगों को धीरे-धीरे खदेड़ कर लाया है।

तीसरा : खदेड़ कर तो मुझे भी लाया गया है। तब भी समझा था, अब भी समझ रहा हूँ... पर क्या कर सका ?

पहला : हम अपनी मर्जी से नहीं आये हुए हैं...लाचार हो कर आना पड़ा है। हमने विरोध किया है ..मैंने...मैंने खून तक करने की कोशिश की है।

तीसरा : अकेले-अकेले लड़ाई नही हो सकती। धीरे-धीरे मर जाना पड़ता है या फिर यहाँ आ पहुँचना पड़ता है।

लड़की : यकीन कीजिये, हम लोग मानना नहीं चाहते थे।

तीसरा : *(स्वगत) अकेले-अकेले लड़ाई नही लडी जाती, धीरे-धीरे मर जाना पड़ता है या फिर यहाँ आ पहुँचना होता है।*

पहला . हम यहाँ कहाँ आ गये है ?

तीसरा : उन लोगों की लेबोरेटरी में।

लड़की : क्यों ?

तीसरा : एक्सपेरिमेंट।

पहला : कैसा एक्सपेरिमेंट ?

तीसरा : लास्ट एक्सपेरिमेंट।

लड़की : वे लोग हमे लेकर करेंगे क्या ?

तीसरा : (उदास) पता नही। इस दरवाजे की कुंडी खटकने लगेगी.. एक आदमी आयेगा।

पहला : (डरा हुआ) *हाँ, यह हमें मालूम है।*

तीसरा : मुझे भी सिर्फ इतना ही मालूम है।

लड़की : पर मैंने सुना है, वह इंटरव्यू लेने आयेगा ?

तीसरा : पहले इंटरव्यू ही होता है। ठीक है। मैं उस कमरे मे जाता हूँ। आप लोगों के बाद मेरा नंबर है। इन कमरों मे शायद हम जैसे और भी बहुत लोग है। चलूँ।

धीरे सधे क़दमों से तीसरा चला जाता है।

लड़की : अगर कोई आया तो हम दरवाजा नही खोलेंगे।

पहला : वे खुद ही दरवाजा खोलना जानते है।

लड़की : फिर हम क्या करें ?

पहला : इंटरव्यू देंगे ?

लड़की : नहीं।

पहला : और कोई रास्ता नहीं है।

लड़की : तुम्हारा वह छुरा कहाँ है ?

तीसरा : ज़िंदा नहीं है, यही है असली बात...मर गयी या नहीं यह सब कौन जानता है ?

लड़की : इतनी पहेलियाँ क्यों बुझा रहे हैं ?

तीसरा : अभी पहेलियाँ क्या, अभी तो शुरुआत ही है। दो छोटे-छोटे दीयों की तरह टिमटिमा रहे हैं। पर कब तक ? एक फूंक में छू-मंतर। (चारों तरफ़ देख कर) बेहद खाली-खाली लग रहा है। भगवान जाने कब तक घर लौटूंगा।

पहला : अभी तो आपने कहा, ये आपका घर है ?

तीसरा : कहने से ही हो जाता है ? अभी जो आप कह रहे थे, माल-असबाब से आपका कमरा भरा हुआ था। सचमुच था क्या ?

लड़की : था ही तो।

तीसरा : (डांटते हुए) बस. बस, कुछ भी नहीं था। (आवाज़ बदल कर गंभीर हो जाता है।) कुछ भी नहीं था।

पहला : डाँटिये मत, हमारी बहुत-सी चीजें थीं।

तीसरा : (कठोर स्वर में) झूठ है। कुछ भी नहीं था। (आवाज और भी सख्त हो जाती है।) सच कहिये, था ? या आपके मन में इन चीजों की चाह थी ? श्रृंगार की चीजें, फर्नीचर, रौब, वैरा...कम्फर्ट, आराम ...और आराम...आप चाहते थे। मन ही मन ये सब चाहते थे।

लड़की : आराम कौन नहीं चाहता ?

तीसरा : मैं भी चाहता हूँ, सब चाहते हैं। सिर्फ पाने का तरीक़ा यह बताता है कि कौन-सा पाप है, कौन-सा पुण्य। ये सब चीजें जहाँ से आती हैं, वहाँ का लेबल बता देता है, कौन-सा असली है, कौन-सा नकली। और जो भोगता है, वही जानता है किस में तृप्ति है और किस में विष। मैं जानता हूँ आप लोगों की जुबान पर विष लगा हुआ है... थोड़ा-थोड़ा करके अंदर जा रहा है स्लो पोयजन। हाँ, इसी तरह, ठीक इसी तरह, इस घर में एक और लड़की जो आज ज़िंदा नहीं है। मोर की तरह कहीं उड़ रही होगी और सोने से मढ़े कुछ लोभी दांत एक-एक करके उसके पंख नोच कर फेंकते जा रहे होंगे। लिपस्टिक के साथ खून मिल गया है, जड़ाऊ कंगन के साथ हाथों की जंजीरें मिल गयी हैं। (चारों तरफ़ देख कर) यह न मेरा घर है, न आप लोगों का। हम लोग आ जाते हैं, या इससे भी सच यह है कि हम लोगों को घसीट कर लाया जाता है।

पहला : कौन घसीट कर लाता है, शायद मुझे पता है।

तीसरा : (तेज स्वर में) कौन है ?

लड़की : जाने कौन हम लोगों को धीरे-धीरे खदेड़ कर लाया है।

तीसरा : खदेड़ कर तो मुझे भी लाया गया है। तब भी समझा था, अब भी समझ रहा हूँ... पर क्या कर सका?

पहला : हम अपनी मर्ज़ी से नहीं आये हुए हैं...लाचार हो कर आना पड़ा है। हमने विरोध किया है...मैंने...मैंने खून तक करने की कोशिश की है।

तीसरा : अकेले-अकेले लड़ाई नही हो सकती। धीरे-धीरे मर जाना पड़ता है या फिर यहाँ आ पहुँचना पड़ता है।

लड़की : यकीन कीजिये, हम लोग मानना नही चाहते थे।

तीसरा : (स्वगत) अकेले-अकेले लड़ाई नही लड़ी जाती, धीरे-धीरे मर जाना पड़ता है या फिर यहाँ आ पहुँचना होता है।

पहला . हम यहाँ कहाँ आ गये है?

तीसरा : उन लोगों की लेवोरेटरी में।

लड़की : क्यों?

तीसरा : एक्सपेरिमेंट।

पहला : कैसा एक्सपेरिमेंट?

तीसरा : लास्ट एक्सपेरिमेंट।

लड़की : वे लोग हमे लेकर करेंगे क्या?

तीसरा : (उदास) पता नही। इस दरवाज़े की कुंडी खटकने लगेगी.. एक आदमी आयेगा।

पहला : (डरा हुआ) हाँ, यह हमे मालूम है।

तीसरा : मुझे भी सिर्फ इतना ही मालूम है।

लड़की : पर मैंने सुना है, वह इंटरव्यू लेने आयेगा?

तीसरा : पहले इंटरव्यू ही होता है। ठीक है। मैं उस कमरे मे जाता हूँ। आप लोगों के बाद मेरा नंबर है। इन कमरों मे शायद हम जैसे और भी बहुत लोग है। चलूँ।

धीरे सधे क़दमों से तीसरा चला जाता है।

लड़की : अगर कोई आया तो हम दरवाज़ा नही खोलेंगे।

पहला : वे खुद ही दरवाज़ा खोलना जानते है।

लड़की : फिर हम क्या करें?

पहला : इंटरव्यू देंगे?

लड़की : नहीं।

पहला : और कोई रास्ता नहीं है।

लड़की : तुम्हारा वह छुरा कहाँ है?

(उदास-सा हँस कर) ढूँढना पड़ेगा।

पहला : (उदास-सा हँस कर) ढूँढना पड़ेगा।

लड़की : चलो न, ढूँढते हैं।

पहला : अकेले-अकेले लड़ाई नहीं होती। कोई फायदा नहीं है। याद है? एक आदमी कभी-कभी अचानक आ जाता था, घड़ी की तरफ देख कर कहता था, समय नहीं है, अभी चले आओ। हमने उसकी बातों पर ध्यान नहीं दिया। अब छुरा मिल भी जाये तो क्या, न मिले तो भी क्या!

अचानक बाहर से पुकारने की आवाज़ आती है...लूसी-लूसी! वे चौकन्ने हो जाते हैं। सूट पहने अभिजात वेश-भूषा में दूसरा प्रवेश करता है। हाथ में एक छोटी चाँदी की जंजीर है।

दूसरा : (चारों तरफ देख कर) लूसी-लूसी!

पहला : किसको ढूँढ रहे हैं?

दूसरा : लूसी...माई हनी स्वीट हनी . आई मीन माई स्वीट डौग। लूसी को इधर कहीं देखा है?

लड़की : नहीं, कोई भी कुत्ता इधर नहीं आया।

दूसरा : पर मैंने उसे इधर आते देखा। लूसी इस कदर नटखट हो गयी है न, माई नौटी प्रिटी लूसी!

पहला : आप उसे बहुत प्यार करते हैं क्या?

दूसरा : हाँ, मेरे साथ ही सोती है। बड़ी तेज है। शी कैन ईवन स्मैल एनीबडीज़ फुटस्टेप्स।

पहला : आपको...ठीक पहचान नहीं पा रहा...यहीं रहते हैं?

दूसरा : किसी एक जगह पर रहना मुझे भाता नहीं। आई लव ऐक्सपेंशन। स्प्रैड अप ब्रदर, स्प्रैड अप! दिस इज माइ मोटो। यह धरती बहुत छोटी है। लगता है अगर करवट बदल कर लेटूँ तो शरीर दीवार से टकरा जायेगा। आई लव ऐक्सपेंशन। दिल करता है सब प्लैनेट्स में रस्सी डाल कर झूला बनाऊँ और झूलता रहूँ। बट व्हेयर इज माइ लूसी?

पहला : मैं ढूँढू?

दूसरा : नहीं, कोई जरूरत नहीं। मेरी आवाज सुन कर वह जरूर आ जायेगी। बैठ सकता हूँ?

लड़की : बैठिये न।

दूसरा : (बैठ कर) माइ मिशन इज टु बैपटाइज़। मुझको कई लोग मजाक में कहते हैं जीसस द सैकेंड। देट ओल्ड जीसस ने लेकिन एक अच्छी बात

कही थी—लव दाई नेबर, अपने पड़ोसियों से प्यार करो। बट दैट जीसस वाज़ लैस प्रैक्टीकल। बुढऊ नही जानते थे कि सब पडोसी नही होते। पड़ोसियों को भी पहचानना पड़ता है...बनाना पड़ता है। योर नेक्स्ट डोर नेवर मे बी योर नेक्स्ट डोर एनेमि। तो फिर अपने रिलिजन से मैं किसको प्रोटेक्ट करूँ? अपने पडोसियों को? यही न? यह एक बहुत बड़ी जिम्मेदारी है...और जिम्मेदारी ही धर्म है—रिलिजन। और इसी जिम्मेदारी को निभाने के लिए मॉडर्न साइंस मुझे ऐसिस्ट कर रही है, टाप ब्रेन्स मुझे एडवाइस दे रहे है और मेरी मशीनरी हजारों आदमियों का जाल फैलाये बैठी है। आइ मस्ट लव माइ सिलेक्टेड नेबर्स। प्रोक्टेक्शन के लिए है गन, बुलैट, प्लेन, बम, वार एंड व्हाट नौट। (हँसता है) लूसी! हैलो लूसी! अरे, हाँ, यहाँ पर जाने कौन-सा अपाइंटमेंट था न मेरा?

पहला : आप क्या हमारा इंटरव्यू लेने आये है?

दूसरा : ओ हाँ, लूँगा। पर उससे पहले लूसी चाहिए। कोई उसको मार न डाले। कासपिरेसी! देयर इज़ ए जूडास वर्किंग ऑन अस समव्हेयर।

अचानक तीसरा बाहर के दरवाजे से प्रवेश करता है। संतरी की वेशभूषा में है।

तीसरा : सर!

दूसरा : क्या खबर है?

तीसरा : सर, लूसी फिर बच्चों के पार्क मे घुस पड़ी थी।

दूसरा : घुसेगी नही? बच्चों को प्यार जो करती है।

तीसरा : सारे बच्चों को काटा है।

लड़की : काटा है? आप उसे बाँधकर क्यों नही रखते?

दूसरा : देख नही रही हो, जंजीर मेरे हाथों में लटक रही है? बाँधना चाहता हूँ इसीलिए ही तो ढूँढ रहा हूँ। पर बड़ा तरस आता है—उसकी गर्दन दुखती है न।

पहला : ऐसा खूँखार कुत्ता! आपको कभी उसे खोल कर नही रखना चाहिए।

दूसरा : सभी कुछ समझता हूँ, भाई...पर वह भी तो एक जीव है...उसे भी तो भूख-प्यास लगती है। नही?

लड़की : इसका मतलब यह तो नही कि इतने सारे बच्चों को काटती फिरे।

तीसरा : सव गुस्से से पागल हो गये है, सर! हमारा कौर्डन तोड़ कर इधर घुस पडना चाहते हैं।

दूसरा : घुस पड़ना चाहते हैं? वे तो चाहेंगे ही...यह तो रात-दिन हो रहा है। चाहते रहना उनकी आदत वन गयी है। इसका यह मतलब नही

कि तुम निकम्मे बन जाओ। यू मस्ट डू योर ड्यूटी—जाओ !

तीसरा सेल्यूट करके चला जाता है।

लड़की : यह कुतिया शायद रोज़ ही ऐसा करती है।

दूसरा : नहीं, कभी-कभी।

पहला : इसको गोली क्यों नहीं मार देते ?

दूसरा : क्या कह रहे हो ? जानते हो किस नस्ल की कुतिया है ? इसके अलावा ट्रैडिशन ? इसके दादा, परदादा—और भी पीछे चलते जाओ—इसके पुरखे हमेशा हमारी फैमिली को जेनरेशन आफ़्टर जेनरेशन सर्व करते आये हैं। और मैं इसको गोली मार दूँ ? लूसी के पिल्लों की देख-भाल करने के लिए कितनी मेहनत और कितना ख़र्चा होता है, तुम सोच भी नहीं सकते। इसके अलावा सिर्फ़ उसको दोष देने से ही तो नहीं चलेगा। मेरे ग्रेट-ग्रैंडफ़ादर के समय से ही एक प्रैक्टिस चली आ रही है—कुत्तों को एक-दो चम्मच ब्लड, ड्रिंक की तरह दिया जाता था। अब इनको इसकी आदत पड़ गयी है। अब तो ये चाहेंगे ही।

लड़की . खून !

दूसरा : हाँ ह्यूमन ब्लड। उतना कॉस्टली भी नहीं है। लेकिन वेरी टेस्टफुल—एंड दे लाइक इट वेरी मच। अब तो मेरी लूसी कटोरा-भर खून एक साँस में गटक जाती है। खून, अगर बच्चों का हो तो और भी ज्यादा खुश होती है। लूसी आयेगी तो देखना। अभी वह मेरी गोद में चढ़ कर सारे बदन पर अपना चेहरा रगड़ती रहेगी। चाटती रहेगी और गले से घर्रर-घर्रर मीठी-मीठी-सी आवाज़ निकालेगी। माई प्रिटी नौटी लूसी ! शी इज़ ए जैम ऑफ ए बिच, माई हनी, माई सोल। कब से उसे नहीं देखा, जानती हो ? **(बुलाता है ।)** लूसी... लूसी...!

पहला : उसे यहाँ मत बुलाइये।

दूसरा : **(सहज स्वर में)** क्यों ?

पहला : उसका जैसा वर्णन सुना उससे तो जितनी दूर रहा जाये उतना ही अच्छा है।

दूसरा : **(हँसते हुए)** बड़े डरपोक हो ! अरे, वह क्या सबको काटती-फिरती है ? अगर लूसी को मालूम हो जाये कि तुम मेरे बहुत ओबिडियेंट हो तब तो तुम्हें कुछ भी नहीं कहेगी। तुम्हारे पैरों तले लोट कर दुम हिला-हिला कर तुम्हें प्यार करेगी। और अगर तुम डिसओबिडियेंट होओ, कमरे की चीजें इधर हटाओ, उधर रखो, यह तोड़ो, वह फेंको,

तब लूसी तुम्हारी गर्दन दबोच लेगी। अगर जैसे हो वैसे ही रहो... तो फिर लूसी से अच्छा और कोई नही।

पहला : (सन्देह से) आप कौन है, जरा बताइये तो सही ?

दूसरा : क्यों ?

लड़की : बिलकुल ऐसी ही बातें हमने पहले बहुत बार सुनी हैं।

दूसरा : सुनी क्यों न होंगी ? जो सच है, वह सुनना ही पड़ता है। सिर्फ सुनने से ही कुछ नही बनता—याद रखना पड़ता है—उसे कर्म का रूप देना पड़ता है।

पहला : आप राजा साहब है ?

दूसरा : कौन राजा साहब, तुम किसकी बात कर रहे हो ?

लड़की : आप...आपकी बात कर रहे हैं। आपको हम पहचानते है...बहुत दिनों से पहचानते हैं।

पहला : (उत्तेजित होकर) बहुत दिनों से हम आपका खेल देख रहे है। आपकी उस लूसी ने कितनी ही बार हमारी छाती को अपने पंजों से जख्मी किया है। चाँद की रोशनी तक हमें नसीब नही हुई। अपने पंजों को फैला कर उसने हमसे सब छीन लिया है...उसकी भयंकर चीखो के मारे सोना भी मुश्किल और जागना भी।

लड़की : अब आप क्या चाहते हैं हमसे ? हम लोगों के पास अब और कुछ नही है। विश्वास कीजिये, कुछ भी नही बचा है।

दूसरा : है...अभी भी कुछ तो ज़रूर है।

पहला : (उत्तेजित होकर) था—मेरे पास एक छुरा था और उस छुरे के निशाने थे आप।

दूसरा : फिर उस छुरे का क्या हुआ ?

पहला : (असहाय स्वर में) आप भाग्यवान हैं, अब वह छुरा उठाने से कोई फ़ायदा नही...क्योकि मैं अब अकेला हूं और आप कभी भी अकेले नही होते। आप भाग्यवान हैं—आपका हमला करने का तरीका बड़ी देर में जान पाये।

दूसरा : फिर भी जान तो लिया। यह ही मेरे लिए बहुत ही महत्त्वपूर्ण समाचार है। पर जान कर तुम्हे फायदा क्या होगा ?

लड़की : यह जानना ही बहुत है।

दूसरा : कितना ?

पहला : हम अब अकेले नही रहेंगे...बस इतना।

दूसरा : यही आखिरी बात है ?

पहला : आखिरी बात है।

दूसरा : (हँसता है जैसे कुछ भी नहीं हुआ इस तरह) खैर, जाने दो। क्या खाओगे, बोलो ? एनी ड्रिंक्स ? फ्रूट्स ? और एनीथिंग ?

लड़की : हमारा मज़ाक उड़ा रहे हैं ?

दूसरा : रत्ती-भर भी नहीं। जब तुम लोग आखिरी बातें न रते हो तो मैं भी आखिरी निश्चय पर पहुँच जाता हूँ। आखिरी साँस छीन लेने से पहले आखिरी इच्छा पूरी करने की पुरानी रस्म है न एक। इसीलिये पूछ रहा हूँ—क्या खाओगे ?

पहला : मैं जानता हूँ, आपसे छुटकारा नहीं है...पर अब और डर नहीं लगता।

दूसरा : बहुत अच्छा। फिर अब उस पास वाले कमरे में चले जाओ।

पहला : क्यों पास वाले कमरे में क्यों जायें ?

दूसरा : जाना है क्योंकि ऐसा ही बंदोबस्त मैंने किया है।

लड़की : कैसा बंदोबस्त ?

दूसरा : नो बेबी...जान लेने का कोई बंदोबस्त नहीं है...डरती क्यों हो ? तुम लोगों की तरह बहुत-से लोग ऐसा फुफकारते हैं...सबको थोड़े ही मारता हूँ। कितने ही ऐसे है जो हमें छोड़कर चले जा रहे हैं...क्या इसका मतलब यह है कि उनको मार डालने से समस्या हल हो जायेगी ? मुझे सोचना पड़ता है कि क्यों चले जाते हैं—क्यों तुम लोग फुंफकारते हो ? इसका कारण क्या है ? क्या रहता है तुम लोगो के खून मे ? मैं तुम लोगो को उस कमरे मे ले जाकर यही पता लगाऊँगा।

पहला : आपकी किसी भी चीज़ पर हमे विश्वास नहीं है। अगर हम उस कमरे में न जायें ?

दूसरा : यह ताकत अभी भी मुझ मे है, भाई ..अभी भी मैं तुम लोगों को वहाँ ले जा सकता हूँ।

ताली बजाता है। तीसरा कंधे पर बंदूक लिये संतरी की वेश-भूषा में चुपचाप आकर खड़ा हो जाता है। दूसरा उसे इशारा करता है। तीसरा उन दोनो के पीछे आकर खड़ा हो जाता है।

दूसरा : क्या हुआ, चल रहे हो न ? ठीक थे हम लोग। पर तुम लोगों ने ऐसी मुसीबत खड़ी कर दी कि एक और आदमी को बुलाना पड़ा। क्या हुआ, आगे बढ़ो !

वे कठोर परंतु शांत चेहरे से मंच से बाहर जाने के दरवाज़े की ओर बढ़ते हैं। पीछे संतरी है।

दूसरा : अरे, ठहरो, ठहरो ! मुझे छोड़ कर ही आगे बढ़े जा रहे हो ? एक बार उस कमरे में चले जाने पर और बातचीत तो नहीं हो सकती न... उसी वक़्त ऐक्सपेरिमेंट स्टार्ट करना पड़ेगा। पहले से ही सावधान किये दे रहा हूँ, थोड़ी तकलीफ़ ज़रूर होगी, लेकिन इसी से शोर मचा कर रोना-धोना न शुरू कर देना। जितना भी खून तुम्हारे शरीर में है, सिरिंज से निकाल कर कटोरी में रखूँगा। फिर खून को टटोल कर देखूँगा, क्यों बार-बार तुम लोग फन उठाते हो, फुँफकारते हो। अगर तुम्हारे खून में से वह बीजाणु ढूँढ कर उसका संहार न कर सका तो फिर आखिरी लड़ाई में मुसीबत में फँस जाऊँगा। लो, अब चलो। मेरे पास और ज़रा भी समय नहीं है, चलो।

वे तीनों चले जाते हैं। उनके जाते ही मंच अंधकार से भर जाता है। उन दोनों की चीख की और तूफ़ान की-सी आवाज़ आती है। बीच के दरवाज़े पर सिर्फ़ एक लाल रोशनी पड़ती है। दरवाज़े को ठेलकर लाल रंग की कटोरी हाथ में लिये दूसरा प्रवेश करता है। मंच के बीच में से सहमा हुआ, डरा हुआ-सा चेहरा आगे बढ़ता है। लाल स्पाट सिर्फ़ उसी के इर्द-गिर्द है बाक़ी चारों तरफ़ अँधेरा है। एक हाथ से कटोरी पकड़े दूसरा हाथ निःशब्द दर्शकों की ओर बढ़ाता है।

दूसरा : ब्लड़ ! बहुत कम था खून। दो पूरे शरीर, पर इतना थोड़ा-सा खून ! लूसी का पेट नहीं भरेगा। आप लोग ब्लड रिपोर्ट का ही इंतज़ार कर रहे है न ? पर इस बार भी मैं आपको खुश न कर सका। समूचे खून को टटोल कर भी यह पता नही लगा पाया कि उनके क्रोध के बीजाणु कहाँ छिपे हैं...उनका खून इतना चालाक, इतना धूर्त है, इतनी फिसलन है उसमें। मेरी उँगलियो की पकड़ में नही आता, माइक्रो-स्कोप मे परछायी तक नही पड़ती। ज़रा-सा हिलाने पर यह खून कटोरी में जैसे भयानक हँसी हँसने लगता है। मेरी आखिरी लड़ाई है न इन भयंकर रक्त-कणो से। मुझे जीतना ही है। (हँसता है।) जीतना ही होगा। कटोरी के खून मे मेरा प्रतिबिंब झलक रहा है। कितना सुंदर मुकुट है ! **(कटोरी में परछायीं की तरफ़ एकटक देखता हुआ ज़ोर से चीखउठता है।)** यह क्या ? मेरे मुकुट पर असंख्य कीड़े ! खून मे से उछल-उछल कर आ रहे है। मेरा मुकुट ! मेरा मुकुट ! **(दोनों हाथों से अपने मुकुट को पकड़ कर रखना चाहता है, साथ ही हाथ की कटोरी ज़ोर से ज़मीन पर गिर पड़ती है। वह हाथों**

से सिर पकड़े डरा हुआ-सा उस तरफ़ देखता रहता है और उछल कर एक ओर हट जाता है।) यह बहता हुआ खून मेरा पीछा कर रहा है! (रुआँसा होकर अपने सर को हाथों से पकड़ कर अपने शरीर को टेढ़ा करके एक ओर से दूसरी ओर ले जाता है।) खून बहता हुआ आ रहा है। मेरा पीछा कर रहा है। लूसी! लूसी! सेव मी, लूसी! (अचानक जैसे काल्पनिक लूसी को देख पाता है। आश्वस्त हो कर, परंतु थकी हुई आवाज़ में) माई लूसी! ड्रिंक लूसी, ड्रिंक! (बैठ कर लूसी को प्यार करता है।) लूसी माई हनी, हाँ, सारा पीना पड़ेगा तुझे सारा। (अचानक उठ खड़ा होता है।) लूसी, गैट अप। रन औन, लूसी, रन औन। ये खून तुझे भी चेज़ कर रहा है। भाग! लूसी, खून तेरा भी पीछा कर रहा है। भाग, मेरे साथ आ—बहुत आहिस्ता—छुप कर।

बेहद डरा हुआ-सा पीछे हटता रहता है। फिर बीच के दरवाज़े से अदृश्य हो जाता है। मंच पर अँधेरा है। रोशनी होते ही पहले दृश्य के आरंभ की तरह दूसरा और तीसरा चीजें झाड़-पोंछ कर रख रहे हैं। पहला मेज़ पर सिर टिकाये बैठा है। लड़की खिड़की से बाहर देख रही है।

लड़की : (सबकी तरफ़ देख कर) हमारी खबर ज़रूर मिल गयी होगी। इस कमरे की तरफ़ आ रहे हैं। रास्तों में भीड़ के रेले की तरह गुज़रने-वाले लोग...सब इधर ही आ रहे हैं। हम अब अकेले नहीं हैं।

तीसरा : अगर राजा साहब आ जायें तो? आने भी दो, अब हम अकेले नहीं, बहुत से हैं।

पहला : वे लोग आ जायें तो हम अकेले नहीं रहेंगे। उनके आने के पहले ही जिससे राजा साहब अंदर न आ सकें, इसलिए दरवाज़े को अच्छी तरह से बंद करता हूँ।

लड़की : अगर ये दरवाज़ा धकेल कर घुस आयें तो?

पहला : इस कमरे की सब चीज़ें लाकर दरवाज़े पर ढेर लगा कर रखते हैं। वी कुइक!

सब मेज़-कुर्सी और जो भी कुछ असबाब है, ला कर बीच के दरवाज़े पर ढेर लगाते जाते हैं। बहुत जल्दी यह सब काम करना है। साथ-साथ नीचे लिखे संवाद बोले जायेंगे।

पहला : हमें दूसरे खेल के लिए कमरे को बिलकुल बदल डालना है।

दूसरा : जहाँ पर जो चीज़ रखनी है, हम खुद रखेंगे।

तीसरा : अब जो नाटक होगा उसमें मैं दो रोल करूँगा। हाँ, सीधा, साफ़-सा

एक, और...।

लड़की : मेरे रोल की लड़की बहुत जबरदस्त होगी...उसके पास बहुत-से काम होंगे और उसका पार्ट भी बहुत लंबा होगा।

पहला : अब की बार राजा साहब का खून दर्शकों को दिखाना ही है। अब के हमें जीतना ही होगा।

दूसरा : मैं राजा साहब का रोल और नहीं करूँगा। मुझे नफ़रत होती है। (पास के दरवाजे की ओर देख कर) वह देखो, वे लोग आ गये हैं। आइये, आइये !

सब प्रसन्नता से उस ओर देखते हैं। पर्दा गिरता है।